सुरसती

(भोजपुरी तिमाही)

(शोध, रचना, संस्कृति आ पुरातत्व प्रधान)

बंगली कवि कहस सुरसती के सनेह नाहीं
पुआँ के धरोहर सिंगार सभ छार बा।

प्रवेशांक

संपादक :

डॉ० नन्दकिशोर तिवारी

रोहतास जिला भोजपुरी साहित्य परिषद, सहसराम के मुखपत्र

अक्टूबर : २००१

www.bhojpurisahityangan.com

सम्पादकीय

सुरसती मइया के 'किरिपे' रउआ हाथ में बा। 'माई के बोली' के दस-बारह अंकन के बाद भोजपुरी में एगो तिमाहीं पत्रिका निकाले के जरूरत बुझात रहे। लिखे वालन खातिर छपल एगो जरूरत ह। दावा कइसे करीं, हावा पर केकर बस बा, लेकिन कोसिस होई जे एकरा के चालू रखल जाव।

भोजपुरी भासा के सक्ती देखिके अचरज में पड़ गइलीं। जगजीवन बाबू के भाखन आ कुंजन जी के कविता भीतरे सना गइल। ई भासा अपना में अतना पूरन बिआ कि दोसरा के भासा सीखल ना चाहे, सिखा भले देले। गुनावन कइलीं कि एकर का परभाव बा। फिलिम में एकर गीत के गावल, के ना सुनल चाहल। भीतरे गइला प पता चलल कि एकर जर बेदन के आदि भासा में पताले पहुँचल बा। विद्वानन भारी एह बात के पहुँचवलीं त देर-सवेर ऊहो लोग समुझ गइल।

राहुल जी ई समुझिए के भोजपुरिओ में लिखले लेकिन आउर विद्वान लोग भोजपूरी के कुल्ही लेके हिन्दी में उँड़ेल दिहल। ईहो ठीके भइल। लेकिन भोजपूरी ओह लोग के घरे से त ना गइल, ना जाई। बड़ा मीठा लागेला ई भासा। बड़ा करुआ बातो ई कह देला। जवन कहेला तत्वे कहेला बिना विसेसन के। एकर अभिधा आ लच्छना दूनो मिलिके व्यंजना रूप में परगट होला। फरिआ के अलगा करे के जरूरत नइखे। एही से कबीर अइसन साधक कवि आ तुलसीदास अइसन विद्वान कवि दूनों एह भासा के शब्दन के, भाव के, व्यंजना के सहारा लेलन। हमार आपन अनुभव बा कि उत्तर भारत के कुल्ही संत कवि एही भासा में सोचले आ लिखले। ई सोंचे के भासा ह। भासा के जर हृदय में होला, मुँह में ना। मुंह त औजार ह। औजार बिना चलवले करम ना करे।

इतिहास देखीं त राहुल जी सिद्धन के भासा के हिन्दी कहलन, पुरान हिन्दी। कुल मिला के चउरासी गो सिद्धन के रचना आइल, कुछ कम-बेसी। चउरासी सिद्धन में छत्तीस गो अकेले बिहार के रहन। बिहार में सबसे जादा संत

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी छेत्र में भइलन। अब उनुकर रचना देखीं। ११ वीं सदी में पुरानी हिंदी में रचल ग्रंथ ऊ लोग के मिलत बा। हिंदी में रचल आत्म परिज्ञान दृष्टियुपदेश के भासा देखीं आ टटोलीं भोजपुरी के परभाव। १७ वीं सदी में मँगनी कवि (मँगनी राम) पदुमकेर (पद्मकेलि) के रहेवाला 'सुरसति के स्नेह' के कइसन ईयाद करत बाड़न।

कहल ई चाहत बानीं कि जवन भोजपुरी में लिखाइल उ अबहिनों छप के सामने ना आइल। राजनीति के हथकंडा पकड़ला से भोजपुरी के आपन सात्विक, तात्विक, सरूप परगट ना होई। पहिले एकर आ संसकिरित के सभ एकरा में आ जाए के चाही। तब साहित्य पढ़े लायक होखी। अबहिन खँखारे भर आइल बा, जेकरा के पढ़वावल सभे चाहत बा। जिअते में 'एही जनम' में कुल्ही चीझ मिल जाव। ईहे भवना काम करता बा। एम. ए. पढ़ावे के बा, का पढ़ाइब रउआ ?

दरिआदास के कविता के संगरह कहां बा ? छत्तर बाबा पंडितपुर बेतिआ के तहसीलदार रहन उनुकर कुल्हीं रचना भोजपूरी में बा— 'देखली में ए सजनिआ सइआँ अनमोल के। दसो दुअरिआ लागे केवरिआ, मारे सबद के जोर के। सून भवन में पिआ निरेखो नयन बा दूनों जोर के। छत्तर निजपति मिलल ऽ भर कोर के'।। टेकन राम धनौती के रहले ह। इनकर सिष्य परम्परा बा। ई सिद्ध पुरूख रहलन ह। एक हजार के करीब इनिकर भजन बा 'बिना भजन भगवान राम बिनु के तरिहे भवसागर हों। सूतल रहलीं नींद में गुरू दिहले जगाय। गुरू के चरन रज अंजन हो, नैना लिहलस लगाये।' ई बानी अब ले परकासित ना भइल। संभुनाथ तिरवेदी ममरखा के रहले ह उनुका भासा पर पूरा परभाव भोजपुरी के बा। ईनर राम के भोजपुरी कविता देखीं--अब घर जाए द ए सखिया, राम सुरति आ लागल मोर। छन छन पल पल कल ना परत बा, घरे आँगन भइल भोर'। बेलवेतिआ मठ के केसोदास कबीर पंथी रहले ह। उनुकर निरगुन गावे आ सुने लायक बा-आजु मोरा हरि के गवनवां चंदन लिपली हो भवनवाँ ? ई सैकड़न जे पद हृदया में राखे लायक बा' परकासित ना भइल। लेकिन बा कहवाँ केकरा भीरीं। अइसहीं नष्ट हो रहल बा। भोजपुर के बाबा रमेसर दास के कविता संगरह उनुका परिवार के लोगन कीहाँ फाट के फेंकाता। ऊ कवनो एकेदमी ना छापी। भोजपुरी के सनेहिअन के छापे के परी। मुखिया, सनेही के सभे मुंह से सुनल, कविता छपल ना देखलस। हम चाहत बानी एह पत्रिका से सूचना दीहीं। लोगन के धेयान जाव। भसे संस्कृति के राछा करी। ना त मेटावे में केकरो के कतना समय लागेला। शब्द से हम संस्कृति आ

www.bhojpurisahityangan.com

अपना संस्कृत भीरी पहुँच जाइब। माँड़-भात खात बानीं रउआ। सोचीं कि ई मांड़ कहां से आइल? कवनो विदवान से पूछीं। जे जानीं त ईहे बताई कि भाई मोरा ई तोहार मांड़ बहुते पुराना शब्द ह। एक दम वैदिक। ओहिना ई माण्ड रहे। अब ई मांड़ हो गइल। ओहिजो एकर अरथ जल रहे, आजुओ बा। 'मंड' रहे त ओकर उत्पत्ति पर विचार भइल। मद् चाहे मुद्+क = मण्ड। नुम् के आगम आउर द 'ड' में। माने जल। जल, मादक आ मोदक दूनो होला। एहिजा भात के माँड़ में रूढ़ हो गइल। एकर कई गो माने ओह घरी रहे। जइसे तेल के ऊपर जमल पदार्थ। दूध के माखन, सार पदार्थ। अब खाली माँड़े रह गइल। तूँ रोज खाते रह गइलऽ, जनलऽ ना एकर मरम एकरा अतमा से तोहरा भेंट ना भइल। भेंटो केहू ना करावल। भोजपुरी के पूआ देखा के लोग मूआ बना देलस।

एहसे भोजपुरी के सेवा हिन्दी के सेवा ह, संसकिरित के सेवा ह। माई के सेवा करे वाला दादी आजी के घर से ना निकाले। मुरुखे अइसन करेला। भोजपुरी के सेवा से हिन्दी के महातम पर कवनो असर ना पड़ी। हजारी प्रसाद जी आ विद्या निवास जी के लेखन के मूल में भोजपुरिए बा। 'भासाभनिति' के खाली भए भर बा। भोजपूरी राज के बात खाली होखे से भोजपूरी भासा ना बनीं। ई राजनीती ह, सेवा ना। हिन्दी गंगा हई आ भोजपूरी सरजू। 'सरजू नाम सुमंगल मूला'। दिमाग के खिरिकी खोलला प उँ कुल्ही अउँस भाग जाई। भोजपूरी के हटवला प हिन्दी के महल हिल जाई आ हिन्दी ना रही त भोजपूरी के बिचार के समुदरे खाली हो जाई। काहें कि भासा एगो विचार ह, सृंखला ह, स्रोत ह, प्रान धारा ह। ई हावा में रहेला, आकास में रहेला। बस एकरा के खींच के, अपना पासे लाके, अपना के धनी बनावे के जरूरत बा। भोजपूरी में शब्द ना मिली त हिन्दी संसकिरित से हम लेब, हमार ओह पर अधिकार बा। खाली थूँक खँखार के भरला से नाला बनेला, नदी ना। पीए खातिर नदी ह, बहावे खातिर नाला।

हम रउआ सभे-के समने कुछ बात लेके खाड़ा बानीं। ठीक होखे त पीठ ठोंकी जा ना त दू छड़ी ओह पर मारीं। हम विद्वानन के भोजपुरी भासा में लीखे खातिर बोलहटा देत बानीं। नाँव करे वाला ना चाहीं जे भोजपूरी के कुल्ही विधा के विधाता बने के नीति अपना के चलत बा। मरला प त सभकर करमे बाँची आ गवाई।

www.bhojpurisahityangan.com

विषय-सूची

सम्पादकीय

अध्यातम

चीझ त ओहिजे बा : स्वामी शिवानंद जी 'तीर्थ'

धरोहर

हितोपदेश : मित्रलाभ 'नकिति'

भोजपुरी के धातु आउर क्रिया : स्व. हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय'

ललित

गारी : नन्द किशोर तिवारी

कविता

हमार पिया फौजी कहावे : सिपाही पाण्डेय 'मनमौजी'

इंडियो बा टाढ़...... : विद्या शंकर 'विद्यार्थी'

नेता जी : फन्दोत्तीर्णानन्दपुरी

गजल : बटोही

बिरह-गीत : अशोक वर्मा 'अलंकार'

धन इ लाल..... : शम्भुदयाल केडिया

तीन गो मुक्तक : विश्वनाथ, वीरेन्द्र, चन्द्रधन

नेवतहरी

इच्छा (मगही कविता) : योगेन्द्र उपाध्याय

कहानी

रउआ धन बानीं : विद्या शंकर 'विद्यार्थी'

लघुकथा

ई·····का·····हो ? : राम रक्षा मिश्र 'विमल'

समीक्षा

एगो किताब (नर्मा तउनीं न) ,

बतकही : ब्रजेन्दरनाथ तिवारी

टिप्पणी

उगऽ हो अदितमल : नकिति

नाया अकुराइल

लोक गीत : श्री भगवान पण्डित

बखरा : छत्रपति 'अलबेला'

मूल्य

सुरसती तिमाही

संपादक : डॉ. नन्दकिशोर तिवारी

सहायक : विद्या शंकर 'विद्यार्थी'

रोहतास जिला भोजपुरी परिषद,

सहसराम के मुख पत्र

संपर्क :

निराला साहित्य मन्दिर, बिजली शहीद,

सहसराम रोहतास, बिहार।

www.bhojpurisahityangan.com

अध्यातम :—

चीझ त ओहिजे बा

स्वामी शिवानन्द जी 'तीर्थ'

एगो अदिमी एक दिना अधिका सराब पी के बेहोश हो गइल। घरे आवेके लकम लगले रहे घरे आ गइल; लेकिन 'ई हमरे घर ह' ओकरा पहचाने ना होखे। ऊ रोवे लागल, चिला के कहे लागल केहू हमरा घरे पहुँचा देव। रात के बेरा रहे। औचक्का में हाला सुनि के सभ पड़ोसी जुट गइलन। सोचलन पागल हो गइल वा का ? आपन दरवाजा पर वा आ कहता कि घरे पहुँचा द। ओकर माइओ दरवाजा खोलिके अइली, समुझावे लगली बेटा घर के दरवाजा प बइठ के आपन घर खोजत बाड़ऽ। सभे तोहरा समुझ पर हँसत बा।

ई त घटना भर भइल लेकिन हमनिओ के ऊहे हाल बा। ऊ सराब पी के घरे में आपन घर खोजत रहे आ हमनी के मोह आ अहंकार के सराब पी ले-ले बानी जा। ओकर नसा शारीरिक रहे, हमनी के मानसिक आ बौधिक बा। हमनी के सभे अपना घरे के दरवाजा पर बानीं जा लेकिन घर खोजे के बेचैनी से परेसान। एगो संत से भगत पुछलन कि इसवर कहाँ मिलिहन ? हम परमातमा के दरसन कइल चाहत बानीं। कहवाँ मिलिहन ? हम बहुते दिना से खोजत बानीं। संत कहलन कि तूँ परमातमा के खोजत बाड़ऽ का कबो ऊ भुलइलो बाड़न का ? ऊ जिज्ञासु कहलन कि भुलइला के हमरा पतो नइखे। तब संत कहले जब भुलइले नइखन तब खोजब कइसे ? खोजहीं के बा त ना खोजला के बढ़ियाँ से समुझ लऽ। इसवर के खोजल ना जा, खो गइला के भरम मिटावल जाला। जइसे बजार से कवनो चीझ लेइअइलऽ, अधिका दिन हो गइल, त ओकर विस्मृति हो जाला, चिझवा त घरवे में रहेला। अगर चीझ भुला जाई त मिली कइसे? भुलाइल के खोजल ना जा सके। स्मृति, इयाद भुला ला। अदिमी के भासा सावधानी ना होखला के वजह से रूढ़ हो गइल बा कि भगवान के खोजे के बा, जइसे चीझ के खोजे के बा।

– प्रस्तुत करे वाला
'नकिति'

www.bhojpurisahityangan.com

हितोपदेश :-

मित्रलाभ से

गौड़ देश में कौशाम्बी गाँव के एगो नगरी रहे। उहँवे चंदन दास नांव के एगो बड़ा धनी बनियाँ रहत रहन; ऊ बड़ा विलासी रहन आ धन रहबे कउए। एहसे से घमंड में आ के अपना बुढ़ापा में लीलावती नांव के एगो बनिया के लइकी से सादी रचवलन। थोरिके दिन में ऊ लइकी सेयान हो गइल। अब ऊ वृद्ध बनिआ ओकरा के संतुष्ट करे में असमर्थ हो गइलन। कहल बा कि जइसे जाड़ा से बेआकुल अदिमी के चनरमा आ गर्मी से परेशान अदिमी के सुरूज ना रूचस; ओहसहीं जेकर इन्द्री सिथिल हो गइल ओह पुरुख में इस्त्री के मन ना रमे। कहल भी बा कि जब बार पाक जाय तब पुरुष के वासना के ईछा कइल ओकर विडमना ह। काहें से कि जेकर मन कवनो दोसर पुरुख में लाग चुकल बा, अइसन मेहरारु पाकल बार वालन पुरुसन के दावा समझेली। त ऊ बुढ़वो ओह मेहरारू के बहुते मानत रहे। काहें कि एह दुनियां में प्रानीमात्र के धन आ जीवन के असरा बराबरे बचल रहेला। अउर बूढ़ पुरुख के जवान मेहरारु परान से प्यारा होखेली। विचित्तर बात ई बा कि बूढ़ अदिमी न विषय के उपयोग कर सकेला आउर ना तिआगिए सकेला। ऊ ओह कुकुर अइसन होला कि जेकर दाँत टूट गइल बा, एहसे हड्डी के खाली चाटते रहे लन।

कुछ दिना के बाद लीलावती जवानी के आवेगवश अपना कुल के मरजादा के तोड़िके कवनो नौजवान बनियां के बेटा से परेम करे लगली। कहल भी बा कि पिता के घर में स्वतंत्र रहल, मेला तमासा में जाइल, पुरुखन के बीच जादा उठल बइठल कवनो नियम के पालन ना करे वाला, बिदेश में रहेवाली कुलटन के साथी, अपना वृत्ति के परवाह ना करेवाली, सफर कइल, पति के बूढ़ होखल, ईर्ष्यालु प्रकृति के भइल, ई कुलटी स्त्रियन के विनास के कारण ह। माने एह कुल बात से ऊ लोग के बिगड़े में देरी ना लागे। अउरी सराब पीअल दुरजनन के साथ कइल, पति के विरह, घूमल फिरल, दोसरा के घरे रहल आ सूतल, ई समाज के छः गो दोष ह। ए नारद! उपयुक्त अहथान ना मिलल, समय के कमी रहल, आ ओहनी के चाहेवाला पुरुख ना मिलल, एही से ओह लोग के सतीत्व बचल रहेला। स्त्री लोग के ना केहू प्रेमी ह ना केहू द्वेषी। जइसे बन में गाय नाया-नाया घास खोजत रहेली ओइसहीं ई लोग नाया-नाया पुरुष

www.bhojpurisahityangan.com

खोजत रहेला। आउर फिरू स्त्री धीव के गगरी निअन आ पुरुष जल जलात अंगारा अइसन हो ला। एही से समुझदार अदिमी के काम ह कि ऊ धीव आउर आग के एके जगहा प ना रहे दे। लज्जा, शील सौहार्द, आउर भय एकरा में से एगुड़ो स्त्रियन के सतीत्व ना बचा सके। खाली एगुड़े बात ऊ लोग के बचावे ला कि कोई चाहे वाला जल्दी ऊ लोग के ना मिले। लइकइयां में बाप, जवानी में पति, आ बुढ़ापा में पुत्र स्त्रियन के रच्छा करेलन। एहसे ऊ लोग के स्वाधीन कबो ना रहे के चाही।

एक दिन लीलावती खूबी सज-धज के रंग विरंग के बिछौना पर बनियाँ के लइका संगे मजे में बइठ के बात चीत करत रही। अतने में बुढ़ऊ, उनकर मरद आ गइलन। उनका के देखिके लीलावती झटपट उठली आउर उनुकर बार पकरि के देहीं से लिपट गइली, चूमें चाटे लगली पिआर जतावे लगली; तली मोका पा के उनुकर इयार भाग गइल। कहल बा कि जवना शास्त्र के शुक्राचार्य आ सुरेसराचार्य वृहस्पति जी जानेलन ऊ सास्तर मेहरारु के बुधी में सुभाव रूप से रहेला। उनुकर बुढ़ऊ के गाढ़ आलिंगन एगो कुटनी देखत रहे। मन में गुनानी करे लागल, आखिर अचक्के में ई अपना बूढ़ अदिमी के लिपट के चूमत काहें बिआ? अंत में उहे कुटनी एह बात के पता लगवलस आउर बुढ़ऊ से लीलावती के सजाय दिअववलस। एह में बिना कारन के ओकर चूमल चाटल शंका के कारन हो गइल।

- नकिति

❁

व्युत्पत्तिमूलक भोजपुरी धातु आउर क्रिया

स्व० हयलदार त्रिपाठी 'सहृदय'

अँइठ : साधित धातु (दृढ़ संकोचने) अइँठऽता-अँइठ कके चलत बा। चाहे रसरी अइँठत वा। कुछ लोग 'आवेष्टितः' से एकर सम्बन्ध जोड़ेला। आ पूर्वक वेष्ट-वेष्ठने। कुछ लोग अंगम् एठते ओड़ पूर्वक एठते से भी जोरे ला।

www.bhojpurisahityangan.com

अँउज : (प्राण-क्लेशे-अउँजाता। राम हर बात में अँउजा जालन। मने परेशान हो जालन। (अन्तः मानसे उज्झति) पा० में उज्झ-उत्. अन्तः के अ ओकरा बाद उज्।

अँउस : (उष्मा करणे) -- अउँसऽता। ऊष-एजायाम-उबालत बा चाहे उष्-दाहे। आज बड़ा अउँस बा।

अँकड़ : (काठिन्ये) अँकड़ऽता कं जानं - कड्डति काठिन्यो भवतीति कंकड़म्। पहिले कं के प्राकृत रूप 'अं' रहे। जइसे मालविका-मालविआ बकुलावलिका-बउलावलिआ निपुणिका-निउनिआ। (पा० कड्ड-कार्कश्ये -कड्डति। सं-अकृतक अकतअ। अकता-अँकरा।

अँकुर : (प्ररोहणे)-अँकुरऽता, अँकुराता-(अंकुर रुधिरे पानीये अभिनवोद भिदि इति मेदिनी) पा० आकिलक्षणे धातु। मन्दिवाशिमथिचति चङ्कयङ्किभ्य उरच् प्रत्यय- उणादि-४०।

अँखु : (उद्भेदने स्फुटने च) अँखुआता (पा. अक्षन-व्याप्ती के अक्ष्णोतीति से णू पहिले सवर्ण अँ-ख। भोजपुरी के अनुनासिक प्रकृति ह। एहसे अक्षि वाला अ अँ हो गइल चाहे- अक्षि- (उखड़ति, उखि गतौ के उङ्खति। क्ष के लोप-अँखु।

अँगड़ : (जृम्भो) -अँगड़ाता-जइसे, राम अँगड़ाई लेता। अङ्ग-पदे लक्षणेच। अंग+अड्ड अड्ड-उद्यमे।

अँगेज : (अङ्गीकरणे सहने च) अंगेजऽता। माने बरदाश्त करत बा। सं० पा० ईज-गति-कुत्सनयोः। अंग+ईज - अंगेज।

अकबक : (अवरुद्धवचन प्राणयोः) अकबकाता- जइसे, डर के मारे बोले में अकबकाता। माने परेशानी, अनुभव करता। सं०-पा०-द्विधातु रूप अक-कुटिलायां गतौ और वकि-कौटिल्ये अकबकेति।

भोजपुरी में रूपान्तरण

-'नचिति'

(ई ग्रन्थ बहुते जल्दी प्रकाशित हो रहल बा आरा से)

www.bhojpurisahityangan.com

गारी

डॉ० नन्दकिशोर तिवारी

किरोध हटा के देखीं त गारी बेलकुले बेगारी ह, परतछ झूठ ह, चतरस ह एकदमे साँच ना, एको प्ररसेंट लेकिन विसेसता कइसन बा कि आजु ले सभे एकरा के साँचे समझल। एह गारी खातिर सउँसार अबे तक लड़ल, झगरल, अमनख मानल, रोवल, गावल, पिटलस-पिटाइल, मोकदमा लड़ल आ जिनिगी भर खातिर हार-जीत के रहता खोजि के असान्ती मोल लेहलस। गेआनी-अगेआनी दूनों एकर महत्त्व समझलन आ परजोग कइलन। साधू खातिर ई गारी दोस गिनाइल, गिरहथ खातिर काम जलदी करावे खातिर ई गुन बनल, किरोध उगुले खातिर ई सभकरा खातिर समरथ दवाई बनल। गेआनी गरिआ के आपन सम्प्रदाय अलगा क लिहले, गिरहथ के गारी कचहरी ले गइल, जहवाँ वकील लोग कवनो मोकदमा बिना गारी के लिखबे ना करस। संत लोग एह जग के तीन मरतबा 'झूठो है' कहल–'झूटो है झूटो है, झूठो सदाजग।' ऊ लोग दुनिया के मरम जानत रहे, एहसे गारी के मरमो जानत रहे। गरिओ सउँसारे नीअन, जटिल ह, रहस्यमय ह आ नीमन जमून दूनो ह।

हमहूँ एकरा के अपना छोट दिमाग से जाने के कोसिस में लगलीं, लेकिन आजु ले ना जान सकलीं। जाने के मतलब होला, बहरी भितरी सभके, सम्यक् रूप से जाने के कोसिस आ फिर जाने के कवनो बात ना रह जाए। मन ओतने पर टिक जाव। लेकिन ई विचित्तर चीझ कि एगो बिआह में गारी ना दिआइल त बराते बिदक गइल। कुल्ही उछाह, पिछाह में घुस गइल। एही से बिआह में गारी गवाला, दिआला ना। गाँव में पसुअन खातिर गारी-मार जिनगी भर के रूसा-फूली के कारन हो जाला। गारी उजारे आ बसावे, दूनो के काम करेला। सार बहनोई के परेम गरिए से सुरू होला। ई गारी ना रहित त परेम कइसे परगट होइत। ओइसहीं किरोध, घिरिना बिना गारी के परगटे ना हो सके। गारी नइख देत त तू रूखल-सूखल बाड़ऽ। गारी देत बाड़ऽत मुँह के फूहर हव, तहरा भीतर कीचड़ बा। अब एकर मरम समझीं।

खोजला प ईहे बुझाई कि परेम आ घिरना दूनों के मतारी ई गारी ह। एकरा के जानल, दुनिया के जानल ह। हम अपना मुरूखता में जाने के कोसिस ना कइलीं। अब बाबूजी के कुल्ही बात इयाद आवता त ओकर मरम बुझाता। बुरबक लोग देरी से समझबो करेला। लइका प जब केहू सिकाइत ले के बाबूजी भीरू आई कि फलनवाँ हमरा के गारी देलन ह। त उहाँ के एगुड़े जबाब रहे-

www.bhojpurisahityangan.com

जाए द, कवनो देहीं में लागल बा। कींचड़ रहित त हाँथ से कपड़ा से पोंछवा देतीं। काहाँ देहीं में लागल बा। गारी त हावा ह। एक ओरे से आइल दोसरा ओरे निकल गइल। गारी बुरबक देला, बुरबक के बात के जबाब ना होखे। ई सभ अंगेजे के चीझ ह। गारी के जबाब जबकि गारी ह लेकिन पौरूखवान लोग ओकर लाठी से जवाब देला। गारी माने बिना सम्बन्ध के सम्बन्ध बतावल जोखिम वाला काम। बहिन, बेटी के, जेकरा के देखले नइखे ओकरा से आपन नजदीकी लगाव देखावल जाव। शांती से देखला प ओकरा कहला पर विसवास ना कइल जाइत त जर से बाते ओरा जाइत। सोचे के बात बा कि ई अदिमी चलत रेल में सीट पर बइठे खातिर गारी देत बा, हमार मतारी--बहिन लोग घरे बा। कवनो भेंट होखे के कवो संभावने नइखे। तब गारी कइसन, आ घूसा लात के सुरूआत कइसन?

थोड़ा बहुत ईहे बुझाता कि गारी अदिमी तक सीमित बा पसु पंछी के गारी देत केहू ना देखल सिखवला प जे दे दे गारी सभ्य समाज में जादा परभाव डालेला। मुरूख लोग त बाते बात में गारा-गारी करेला। आजुकाल के छत्री लोग माई बहिन आपुस में दण्ड-परनाम लेखा सुरूए करेला। बूढ़ लोगे के त गारिए बात ह। अदिमी बूरा कहाँ मानेलन? जे कवनो करम करे में असमर्थ बा ऊ त बचने के न परजोग कर सकेला। बचन में करम के उतारे के नाकाम कोसिस गारी ह।

एकर सरूप अदिमी-अदिमी से अंतर खाला। एगो गारी लागे वाला होला आ दोसर लागी वाला। लागे वाला गारी दू तरह के होला। एगो भाई बहिन बेटी जे परिवार के पूज्य आ सहज सनेह के नाता से जुड़ल बा; ओकरा संगे अपवित्र संबंध जोरला खातिर मानल जाला। दोसर गाली ऊ ह जे मूअल जीअल से संबंध राखेला। जे बहुत प्रिय अदिमी के बेमार डाले, मुआवे खातिर, संकट में डाले खातिर, बाचा विन्यास कइल जाला। लागी वाला गारी में प्रेम परधान होला आ सांचो के सम्बन्ध रहेला। ओकरा के हरिअर करे खातिर ताजा बनावे खातिर, इयाद दिआवे खातिर, ओह करम के दोहरावल जाला। ई गारी भीतर अनन्द के बीआ बोवेला। एकरा बिना सम्बन्ध के मुँह पर फेफरी पड़ल रहेला। ई गारी ओठ के सात्विक ललाई ह। इमरित के सीरा में भिनावल मिठाई ह। ईहे गारी खातिर अदिमी खट जाला, भूख जाला, सूख जाला, एह गारी से संसार चलेला आ ओह से उजरेला। एगो बसावन आ दोसर हवन उजारन। उजारन गारी खाली व्यक्ति परधान ना होखे, समाज जात परधान भी होला। जइसे कवनो पूरा सम्प्रदायो के गारी दिआ सकेला। सहर भर के एगो जात के दिआ सकेला।

www.bhojpurisahityangan.com

एकर अमनख एके साथे सभे मान लेला। एकर कीटाणु जलदी फइले लसन। एगो पूरा समूह गारी के झंडा के नीचे आ के झगरा करेला। एहसे फूहड़ता एह में परधान वा। कुछुओ फूहर कहीं चाहे आम्ह एहमें लगते का वा। लेकिन झगरा के जर रोपे में गारी एके साथे जमीन, खाद आ पानी तइआर कर देला।

अइसे ई गारी गाल के उपज ह। गाल लेखा खोखला-पोपला। दुबरइला प जइसे गाल धसे लागेला, ओइसहीं सोचला प एकरो खोखलापन परते परत उघर जाला। किरोध के बदला में हँसी आवे लागेला। गाल बजावे वाला मोहवरा मसहूर ह। व्यर्थ मरहु जनु गाल बजाई। गाल बजावे वाला के आवाज न कवनो अरथ देला आउर ना कवनो सुर। ऊ खाली कहेला, करे ना। करे के साउँज रहित त ऊ कहित काहें के। लेकिन जइसे गाल बजावे वाला संसार के खुस कइले रहत बा ओइसहीं संकर जी के भी। आसुतोस जी ओही पर खुस हो जालन। बम बम हो जालन।

भोजपुरी भासा में गाली 'गारी' कहाला। लकार के रकार होखल एह भासा के सुभाव ह। गोसाईं 'जी' गारी खाली ना लिखलन पूरा एकर मरम बतवलन। जिनिगी भर लइका पर से गारी सुनेवाला के मरम ना बुझाई त केकरा, बुझाई? संत भइला पर सभचीझ बुझाए लागेला। रोज सोचस कि हमहूँ संत हो जइतीं। रामजी के किरिपा भइल, मरम बुझा गइल। तब लिखलन कि समय सुहावनि गारि बिराजा, गारी सोभा देला समया पर। समय के पहचान चाही। अपने खुस रहीं तबे न दुनिया के खुस करब। गारी सुनीं गारी दीहीं। परसंसा सुनब आ गारी ना। उहाँ के परसंसा के विपरीत शब्द गारिए चुनलीं- 'दुख-सुख सरिस प्रसंसा-गारी' अब जेकरा भीरी मद ना ठेकी उहे न गारी सुनिके रह जाई। परसंसा सुन के जे खुस ना होखे उहे गारिओ के देहीं में लागल ना मानी। परसंसा सुन के अनंदित होखे के लत रही त गारी अंगार बनिके, तीर बनिके, बेधबे करी। गारी माने गारी। निंदा, सराप बेंग वचन, एकर पर्याय ना होख सके। गारी-देबे वाला आपन अवगुन ना छिपावे ओकरा के परगट करेला। गंदा आ फूहर करतब के करे खातिर परचार करेला। खाली ओकरा बात से घिरिना कर देला से गारी के बदरी फाट सकेला लेकिन समया आ अवसर के पहिचान रही तब त। जइसे संत निंदक के निअरा राखल चाहत वा ओइसहीं गरिहा के। साधना के पहिलका सींढ़ी पर चढ़ेवाला के समने ई सतुर अइहें उनुका के गाला लगावे के परी। भगत लोग के पहिले कोंहार के डंटा से पीट के देखल जात रहे, तूँ गरिओ नइख सह पावत। तब चेला का होखबऽ हरि के भगत का होखबऽ। हरि के भगत गारी मार में सगरो हरिअर रहेला।

www.bhojpurisahityangan.com

हमार चाचा जी अजोधेआ में जाके साधू हो गइल रहीं। साधू भइला प चाना-चाउर खातिर गाँवे आवत रहीं। उनुका साथे दू गो चेलो आवत रहन। सुभाव खिसकट रहे, तनिको गलती पर गारी मार दूनो से बरसात कर देत रहीं। बाबूजी कहीं कि साधू के अतना खीस आ गारी सोभत नइखे। उहाँ के कहीं कि ई गारी-मार एकरा के अदिमी बनावे खातिर दावा ह। हमनी के अपना गुरूजी से ई परंपरा में मिलल बा। ई चेला लोग के तिलक चनन ह। जब ई हमार गारी मार ना सहिहें त लोगन के कइसे सहिहें। मांगे खाए वाला के हर अदिमी भीरू जाए के बा ओकर बाते सहे के बा। सहनशीलता खातिर ई ट्रेनिंग ह। हमार माई भी अपना लइकिन से खूब काम करावे आ खिसिआ के गारी दे। बाबूजी जब डांटी त कहे कि हमार गारी मार ना सहिहें त सास के कइसे सहाई। सास के सहे खातिर एही घर में अभेआस होखे के चाहीं। गीता में 'तुल्यनिंदा स्तुति मौनी' चुप रहे के सधना बतावल बा। ईहे गारी ह जे सहे के क्षमता परगट करेला।

गोसाईं जी कहलीं कि जब ई पूरा परपंच के ब्रह्माजी बनवलीं त गारिओ के बनवलीं। गारी अदिमी के बनावल हइए ना ह। अदिमी के बनावल रहित त अदिमी मेटा दिहित। अदिमी संविधान बनावत बा, फिर संसोधन करत बा। जब गारी सभ झगरा के मूल में बा त अदिमी काहें ना मिटवलस। आज के शासन में त सभे के परचार परसार एकरे बल पर चलत बा। कलियुग झूठे लेना-देना चबेना पर टिकल बा। एहसे 'गारि कीन्ह करतार' ब्रह्मे जी बनवलीं एकरा के। विधाता के निर्माण में कवनो संसोधन के गुंजाइस नइखे। बस एगुड़े उपाय बा उनुकर आसिरवाद मान के दूनों में खुस रहऽ। नेता लोग गारी आपन परचार मानेला- हम धारा में बानीं त। जूता के माला भी खुस होके पहिन लेला। वकील लोग एही आधार पर पूरा मोकदमा के मजबूत बनावेला। जइसे हावा चली, बदरी होखी, घाटा घेरी तब न पानी बरिसी। ओइसहीं गारी केहू दीही तब न लाठी चली। हर लाठी के जर में गारी बा। बिना गारी देले, अदिमी में हरकत होइए ना सके। वकील लोग अपना मुवक्किल के सिखावे ला 'कहिह कि ऊ गारी देत आवत रहन।' जतना पइसा आ यौन सम्बन्ध के अपराधिकी में महत्व बा; कारन रूप से ओइसने गारी के भी बा।

एहमें चिढ़ावे वाला अदिमी हमरा बड़ा पसन्द बाड़न। ई लोग गारिए सुने खातिर, मार खाए-खातिर केहू के चिढ़ावे ला। चिढ़ेवाला गारी मार से आपन हरकत सुरू करेला आ दूनो खातिर व्यगर रहेला।

www.bhojpurisahityangan.com

जइसे बरखाके पहिलका पानी से जमीन के गतर-गतर भींग जाला ओइसहीं चिढ़ावे वाला के गारी सुनते मन अनंदित हो जाला। अतने नाहीं सुनेवाला भी दूनों के संवाद से ओतने अनंदित हो जाला। लइका प चरन दादा के गारी लइकन के ओतने प्रिय रहे। ऊ नाटा सरीर के रहन बकरी में-में कइला पर जमीन असमान गारी से एक कर देस उनुकर किरोध सांत होखे में दू-तीन घंटा लाग जात रहे। लइका चिढ़ाके भाग जा सन आउर ऊ देरी तक गारी देत रह जास। लाख समझवला पर कवनो असर ना होत रहे। उनुका साथे उनुकर मेहरारु भी गारी देवे लागस। पूरा गाँव से झगरा होखे के नउबत लाग जाए। लइका एगो पद बना लेले रह सन :-

चरन दादा चरन दादा बकरी चरावेलन।
बकरिआ मर गइल त चुतर सुहरावेलन।।

हमरा बुझाते ना रहे कि एह में बात का बा। बहुत दिन बाद पता चलल कि लरिकपन में बकरी के साथे उनुकर रोमांस के एह घटना में जिकिर हो जात रहे। एह से ऊ अपमानित महसूस करत रहन। सीजत चाचा के कमर से झुकल ना जात रहे। एह से पैखाना करत बधार में ऊ लाठी पर झुक जात रहन। लइका देखलसन-चिढ़ावे लगलसन 'हथिआ सोंढ़ लटकवले बिआ'। अब गाँव भर के मनोरंजन सुबहे-सुबहा हो गइल। एहीसे सब भासा में गारी बा। आपन भीतर के गलीज निकाले खातिर। आ गलीज निकलला पर केकरा खुसी ना होखे ? नाक में के मल, दांत में के मल, पेट के मल निकलला प केकरा खुसी ना होखे। पूरा मन के मइल धोआ गइला प सन्त लोग कतना खुस रहेला। कहेला कि ईहे ब्रह्मानन्द ह। हर समाज में असलीलता के पूजा बा। असलील काम ना होखे त संसार के धारे सूख जाई। अगर मार के काम गारी से चल जाय त कतना बड़ा काम हो गइल। आपन भीतर के गलीज गाली से निकल जाय त उहे आछा बा। केहू के पाछा त ना परे के परी। तिरदंडी स्वामी खूब गारी देत रहली हँ। मेहरारून के समने गारी देत सुनले बानीं। कहीला जवन घोड़ा लगाम देला प नइखे मानत ओकरा पानी भरल पलिहर में चढ़िके दउरा द बस तोहर बात मान जाई। औरतन खातिर इंहे गारी ह। ऊ लोग मोह के अवतार ह। गारी ऊ लोग के दिमाग ठीक कर देला। मार से अच्छा गारी ह, ऊ लोग आपन गलती मान के समझ जाला।

www.bhojpurisahityangan.com

गोसाई जी कहलीं कि गारी गारल चीझ ह, बेलकुले सार-तत्व। विधाता गार के एकरा के बनवले। एकरा में भी संसार नीअन इमिरित आ बिख दूनो बा। बुरबक के ई गारी कुआर के घाम लेखा आ जाड़ में फाटल कपड़ा लेखा असर करेला। ब्रह्मा जी आउर चीझ में त इमरित विख अलगा-अलगा बना के रखलन लेकिन गारी में दूनों के मिला देलन। ई एगो सिक्का के दूनो पहलू लेखा हो गइल। परेम करीं त एह से घिरिना करीं त एह से। तत्व जाने वाला एकरा के जानी। ई परेम आ बैर के माता ह, जननी ह, जनमावे वाला ह। जइसे मतारी के कोख से खल आ साधू दूनों निकलेलन। गेआन सभको ना होखे आ तत्व ज्ञान त केहू-केहू के होला। साधू लोग जब काम क्रोध के नरक के दुआर मान के चलेला त किरोध ना भइला पर गारी आई कहाँ से? जीभ के बन करे खातिर मूंहे बन करके मौनी बन जाला। जे बुरा ना माने ऊ बुध ह। जे बुरा माने ऊ गँवार है लइकन के गारी देके हरसावल जाला मेहरारू गारी सुनिके परसन्न रहेली। साली सरहज एही गारी से पसिजे ली। नाता बे नाता कुल्ही गारी में चलेला। ई बेराह के राह बनावेला। कोई भउजाई के छेड़छाड़ करीं आ गारी सुनलीं; दूनों के मन हरिअर हो जाई। नाता देहे-देहे होला, पाटा खेते-खेत होला। गारी आ मजाक दू चीझ ना ह। मजाको में गरिए चलेला। गारी में साहित्य के नवो रस मिलल बा। गारी गाढ़ आ गूढ़ दूनो चीझ ह। जीभ दुइए काम करेले-राम राम चाहे गारी दुइए गो सिखले बीआ, तीसर चीझ ना। कुछ लोग गारी में वाचिक हिंसा के बू देखेला। वेद में गारी खातिर कुसूल शब्द आइल बा- कुसूलाय च कुक्षिताः (अर्थ) जब कवनो उपाय ना अदिमी के होखे त गारी बकेला। मोटर के ड्राइवर हर अपना बाधा खातिर अपना मुँह से ईहे मन्तर पढ़ेलन। अदिमी के समने ई गारी ना दिआ अपना मन के खीझ निकाले खातिर ओकरा अनुपस्थिति में ई निकलेला। मन के उद्गार में से एगो बहुत पवित्तर उद्गार ह। किरोध के, काम के, ईर्ष्या-द्वेष के, निकाले खातिर एकरा से आछा कवनों मंतर नइखे बनल। सांचो इसवर अपना हाथे से एकरा के बनवले बाड़न। एकर प्रकृति हिंसात्मक ना ह, प्रतिफल हिंसात्मक हो जाला एहसे हिंसा एकरा पर आरोपित ह। मरम ना जनला पर लइकन के गारी ना सिखावे के अदिमी कहेला लेकिन सेआन भइला पर ऊ गारी देवे लागेला। जनकपुर के मेहरारू आ मरद गारी देवे में ओस्ताद रहन।

www.bhojpurisahityangan.com

गोसाई जी गेआनी जनक के गाँव के बात जानत रहीं। जब अपना भीतर के भाव पचावल कठिन हो जाला त केहू अपच के दरद काहें सही? एकरा के गरिए व्यक्त कर सकेला। लइकी के सादी करे खातिर दहेज के गठरी लेके सभ कुछ देबे खातिर भी भिखमंगा बनिके केहू के दरवाजा पर रउआ जात बानी आ ऊ कुकुर लेखा रउआ के दुतकार देता, त रउआ भीरू गारी के सिवा ओकरा के देबे खातिर का बचल बा ? रउआ अपना जी के जरनि कइसे निकालब। गारिए त ओह पर सहारा देके जीए खातिर दोसरा दुआर पर जाए खातिर सकती दीही, भगती दीही। सठ खातिर गरिए ह। कुचाल खातिर गारिए ह। तब न 'सब मिली देहिं महपिहि गारी' लिखाइल। दसरथ जी गारी सुनले पर कवर उठवलन। 'पंचकवल करि जेवन लागे-गारिगान सुनि अति अनुरागे'। एहिजा गारी गीता हो गइल, अति अनुराग बढ़वलस। परेम में मगन कर देलस। अनेक् रस के बेंजन गारी में मिलके एक रस हो गइल। गारी खाए खातिर पाचक ह, चूरन ह। पचवले जाला तहे-तह। जवन गारी के पात्र बाड़ीसन ऊहे लगा लगा के गारी देत बाड़ीसन, गोसाईंजी के कवि ओकरा के मधुर धुनि गारी कहलस। ओहनी के आपन पुरुखन के अजोधेआ के नरिअन के संगे सम्बन्ध बतावत बाड़ी सन। गाना बना के गावत बाड़ीसन, राजा के हालत बा कि उनका खूब माजा आवत बा- हँसत राउ सुनि सहित समाजा। सभे के रस मिलत बा, माजा आवत बा। सभकर मेहरारू जोतात बाड़ी। ई गारी अब समधी के सम समधी बना देला। एह रस से सारा समाज सरस हो जाला। ईहे सरसता जीवन ह। सरग ईहे ह जवना में रग-रग में परेम बस जाव। ना त रग ना रक-नरक। तत्वज्ञानी राम के पिताजी, दसरथ जी एकरा मरम के समुझ गइलन। गारी के गारल परेम से हृदया के भिंगा लेलन। बुढ़ौती में समधिआना के गारी कतना अनन्द देलस।

सांचो के ई गारी एह संसार खातिर ओतने जरूरी बा जतना नारी। ईहे दूनों से जगत गतिमान बा। साहित्य में चाहे बात में एकर प्रयोग लालित्य ला देला। गारी सरापे खातिर ह मुआवे खातिर ना। ई मंगल तत्व ह। सवारथी समाज के शिक्षक ह ई गारी। भोजपुरी में त ई गारी बोली के बतिआवे के अंगे ह। असलीलता देखे वाला के आँख में होला, एकरा में कहाँ बा। समाज में गरिहा लोग के समया पर ध के बोलावल जालन जइसे परमोद जी। एकरा के सीखे के ना परे, भितरे रहेला। ई लोक के बेद ह, संवेदना के छेद ह, ना जानकार खातिर खेद ह। जानकार खातिर सुवेद ह। मुरुख खातिर महमारी ह, पंडित खातिर बेमारी ह आ संत के रोहारी ह।

www.bhojpurisahityangan.com

हमार पिया फौजी कहावे

सिपाही पाण्डेय 'मनमौजी'

करगिल में गोली चलावे
हमार पिया फौजी कहावे

आपन तिरिया के-के नाही प्यारी
माथे तिलक दे भेजे महतारी
देशवा के लजिया बचावे- हमार.....।

बर्फीली चोटी रस्सी के सहारे
अंग-अंग टिटुरल, हिम्मत न हारे
चोटी पर तिरंगा फहरावे-हमार.....।

बारूदी सुरंग बम तोप क गोला
बड़-बड़ वीरन क मन डोला
आग बीच परलय मचावे--हमार .....।

एगो जवान दश-दश के मारे
बैरिन के सेना संहारे
दुश्मन के छक्का छोड़ावे-हमार .....।

शेर नियन चाल से युद्ध के कमालसे
भारत के भाल पर अपना रक्त लाल से
गौरव के तिलक लगावे--हमार .....।

विजयी हो चाहे वीर गति पावे
'मनमौजी' देश भगतन के गुन गावे
मरे से अमर पद पावे-हमार.....।

❁

भगवानपुर (कैमूर

www.bhojpurisahityangan.com

इंडिओ बा ठाड़ लेके हंड़िया

विद्या शंकर 'विद्यार्थी'

अगिया लगवल तू दियरवा इयरवा से हमरी झोंपड़िया
बिगी देलऽ बम बरियरवा, कि बांचल महमंड ना खोपड़िया।

थाने मुअल बछरू बथाने धेनु गइया
बबुआ बहिनिया दुअरिया प मइया
रहल नाहीं हड़ओ ठटरिया। कि.....।

लिखि देलऽ खुनवा से नया इतिहसिया
जामी ना जमिनिया के झउँसाइल घसिया
घरवा लागेला खँड़हरिया। कि.....।

तोहरा ना दिलवा में दया आइल तनिका
मुदई नियन हो ममोरी देलऽ मनिका
नाहीं मेमिआइल बकरियां। कि.....।

अंसुआ अमेरिका पोछेला आपन अंखिया
चले खाति चाहीं ना सहारा बैसखिया
दोस्ती के टुटले लकड़िया। कि.....।

अपना के बेरी बाबू माई नरियालऽ।
आइल अब अमेरिका निमने फरियालऽ
चुर होई तोहरो खोंपड़िया। कि.....।

www.bhojpurisahityangan.com

मजहब के नमवाँ प कइलऽ रजनितिया
लाते लतिअवल तू रीतिया पिरितिया
केहू ना कहेला तोहे बंढ़िया। कि.....।

तोहरा ना लागल रामा तनिको सा मोहवा
लोरवा पोछीं के आइल गाहे अब लोहवा
घुसऽ जन खोहवा पहड़िया। कि.....।

तोहरी करनिया से लोगवा घिनाइल
अंगुरी के पोरवा प दिनवाँ गिनाइल
पाला परल मरद बा घंखड़िया। कि.....।

चुपे चुपे केहू त केहू के मार दीही
अनचितले में घर केहू जार दीही
तवने कइलऽ धोखा धड़िया। कि.....।

गइवऽ गजलवा ना गइवऽ ठुमुरिया
भाग हो पराह लागल चढ़ेला घुमरिया
कहवां लुकइब ध के गड़िया। कि.....।

छुटि जाई सभ दिना खाति तोहार बनवाँ
धरब गलतिआ कइल का प कनवाँ
इंडिओ बा ठाड़ लेके हंड़िया। कि.....।

– गिरिडीह, धनबाद

www.bhojpurisahityangan.com

नेता जी

फन्दोत्तीर्णानन्दपुरी

तूं जनता के खूब बझवले बाड़ऽ नेता जी।
आगा पाछा खूब लड़वले बाड़ऽ नेता जी।।
जेकरा भेंटे के चाहीं
ओकरा तनिको ना भेंटल
उपरे ऊपर लोकि के चादर,
ओढ़ी के लोगवा घेंपल।
तूं अइसन माया जाल बढ़वले बाड़ऽ नेता जी।
तूं जनता के खूब बुझवले बाड़ऽ नेता जी।।
कइलऽ बात गरीवन के,
भूखा नंगा वा देखऽ
उजरल मँड़ई भीत बा भरकल,
तनिका आइ निरेखऽ।
तूं लुक्कड़ के फौज बनवले बाड़ऽ नेताजी।
तूं जनता के खूब बझवले बाड़ऽ नेता जी।
चार सहेली आगा पाछा
घूमऽ भेस बना के,
जे भेंटेला ओकर दुख,
हरेलऽ तूं बतिया के।
सबके बकरे मा के पाठ पढ़वले बाड़ऽ नेताजी।
तूं जनता के खूब वझवले बाड़ऽ नेता जी।।
रूखी अइसन एह डाढ़ी से
ओ डाढ़ी पऽ जालऽ
विना काम के माल मलीदा
बइठल - बइठल खालऽ

www.bhojpurisahityangan.com

तूं धरम करम गंगा दहववले बाड़ऽ नेताजी।
तूं जनता के खूब बझवले बाड़ऽ नेता जी।।

सुनिलऽ जनता जागि रहल बा
लिहले हाथ लुकारी
आंखि तड़ेरले मूठी बन्हले,
आई तोर दुआरी।

पूछी कतना माल पचवले बाड़ऽ नेताजी।
तूं जनता के खूब वझवले बाड़ऽ नेताजी।।

– *रामडिहरा, रोहतास*

गजल

बटोह

जोश में होस ना हेरा जाए।
प्रीत के रीत ना सेरा जाए।।
नीर नदिया के जल में उलथत बा
नाव तूफान में ना घेरा जाए।।
पाँख रहते ना उड़ सकल कहियो
बन्द पिंजड़ा में ना पेरा जाए।।
अमन के आग में सब देंह जरे
अउरी माहुर उ ना मेरा जाए।।
बाग सुसुकेला बिना पानी के
फूल कुम्हिए कतो झुरा जाए।।

❁

तिलौथू, रोहतास

www.bhojpurisahityangan.com

बिरह गीत

अशोक वर्मा 'अलंकार'

जवसे गइले परेदस पिआ
मन भटकत चारों ओर।
कइसे काटीं, कटत ना रतिआ
साथे गइल आँख से निंदिआ
चाँद निरेखत, तारा गिनि के
कर दीहींला भोर।।

चढ़ल जवानी बहुत भरमावे
सावन आके खूब चिढ़ावे
ठनके बिजुरी, चमके लोर
मन भटके चारो ओर।
कतना निठुर पिया तरसावे
के जाके, उनुका समुझावे
दरद बढ़े अब पोरे-पोर।।

- झारखंड

धन लाल भोजपुरिया दूनों

शंभुदयाल 'केडिया'

भार बा भिखारी के, नाव ना सुन के हसीं जा
गरब से छाती बीता भ होला
बोअलन बिया लगवलन अमोला

घेरलस बरगद कइलस छँहिरा
मसतक उठा के शान से बिहसीं जा।
कुंजन के कइसे बिसरावल जाई
सुर हरमुनिया के बोली में खोजाई

www.bhojpurisahityangan.com

उनुकर कमी टीसता हिया में
इन्हिको के आदर से चनन घसीं जा।

दुनिया के रीत बेवहार चलल आइल
मोका खेवरा के अदिमी पछताइल
एकेक अछर प अमरीत गरलन
आतमा में गीत आ कविता के कसीं जा।

हमनी के बीच छाप छोड़ गइलन दूनों।
हरदम खातिर मुंह मोड़ गइलन दूनों।
सुरसति मइया के लाल रहले जामल
क के इयाद ओह लाल प हरसीं जा।

टाट भोजपुरिया विदेशिया में खांटी
कुंजन के गजब रामायन, बा माटी
नदी में डूबे से बाड़न बचवले
रउआ सभेजन गड़ही में भीसीं जा।

का रचत बानीं, विचार करीं गीत के
का लय देतानी अइसन संगीत के
बोली उहे मन भावे सभका
इज्जत अबरू दोरपति के बकसीं जा।

कुंजन भिखारी के राह बा बनावल
धन-धन कह के सरग से मनावल
बात के नइखे रउआ से रगरा
शम्भु देयाल केडिया प तरसीं जा।

बाबू वस्त्रालय-गिरिडीह।

www.bhojpurisahityangan.com

तीन गो मुक्तक

(१) *विश्वनाथ*

पान से सत्कार करऽ चाहे करऽ पानी से
आइल अगन्तुक के मीठ बोल के बानी से
देश आ समाज के ई रीति रिवाज ह
सदा सलूकत बेवहार सब आसानी से।

(२) *वीरेन्द्र*

सोना के पानी के घटे ना कीमत
अदिमी के चाहीं बान्हे के हीमत
ओनइस बीस होखे के चाहीं
जिनगी जिअला के तवे बा गलीमत।

(३) *चन्द्रधन*

शेर त सवा सेर होला न कवहूँ
जिनगी भर देखत आइल बानी हमहूँ
पानी बचावत आदि अवलाद आइल
करहीं के चाहीं काम उहे अवहूँ।

विश्वनाथ, वीरेन्द्र आ चन्द्रधन-टेलीफोन
विभाग-गिरिडीह, बोकारो (बिहार)

❁

नेवतहरी :- **इच्छा** *'मगही कविता'*
प्रो० योगेन्द्र उपाध्याय

नञ् मन्दिर छोड़ल चाहइत ही,
नञ् मस्जिद तोड़ल चाहइत ही।
प्रेम के रसरी टूट चलल हे,
ओकरे जोड़ल चाहत ही।

सगरी आपन अल्ला - राम,
झूठो कयल नीन हराम।
सत के सोर पताल में पहुंचल,
ओकरे कोड़ल चाहइत ही।

www.bhojpurisahityangan.com

मन्दिर से सभनी के नाता,
मस्जिद से भी सबके रिश्ता,
खून के धारा बहल चाहइत हे,
ओकरे मोड़ल चाहइत ही।

मन्दिर-मस्जिद अप्पन निशानी,
सचमुच दूनो अप्पन कहानी।
तनी एकता के दीआ जराव,
नञ् केकरो खोरल चाहइत ही।

मन्दिर-मस्जिद नया बनाव,
भइया भारत के सजाव।
घर-घर अलख जगाव सभनी,
नञ् माथा फोड़ल चाहइत ही।

देवकुण्ड (औरंगाबाद)

❁

कहानी :-

रउआ धन बानी

विद्या शंकर 'विद्यार्थी'

शेखर दसवां क्लास में पढ़त रहलन कि अचानक आसमान टूट गइल। जवानी भरल जिनगी में उनुका बाबूजी के दुरघटना में शरीरे बदल गइल। आँख के लोर कुछ बहरी आइल आ अउरी भीतरे-भीतर ऊ पी गइलन। ओह परिवार में उनुका छोड़ के दोसर केहू अगुआन ना रहे। आपन करेजा पत्थल क के माई के धीरज धरवलन- 'माई, चुप रहीं' जब रउआ ना चुप रहब त हम राउर बेटा हईं हम कतना रोअब ? का एह छछोधार रोअला से हमनी के ई दुःख धोआ जाई। माई के समुझावे में शेखर फफक फफक के रोवे लगले। गाँव घर के लोग शेखर के अलगे समुझावे लागल -'चुप रहऽ शेखर, तू एह घर के अब मालिक भइलऽ। जब तोहार ई हाल रही त तोहरा माई के हाल अउरी नू खराब होई? तोहार माई त अब तोहरे मुंह देख के जीहें। एह परिवार के बोझा तोहरे

www.bhojpurisahityangan.com

कपार-कान्ह प बड़ुए। शेखर समुझ गइलन। कि विना धीरज धइले नइया पार ना होई। अब ई नइया बीच दरिआव में बिया, जवना के खेवनिहार हमहीं बानी। लहर तुफान खेवनिहार के परीछा लेला। एह बिकट परीछा के घरी में गेयान आ कला के जरूरत बा। तब कहीं एह नइया के किनार भेंटाई। किनार के बाद कहीं आपन एगो घाट। जहवाँ नइया प सवार सब केहू चैन के साँस लीही। अइसन लहर तूफान में सभकर सांस फूल रहल बाटे। बिना धीरज धरवले केकरो अकुलहट शानत ना होई-माई, रउआ चुप रहीं, हम एगो बात कहऽतानी, रउआ सुनीं। परिवार के सब बेकत चुप हो गइल। उन्हुकर माई आपन लोर पोंछत कहली कहऽ, का कहऽ ताड़ऽ ?

शेखर माई के समुझावत कहलन-माई, हमनी के ई देंह एगो किराया के मकान हउए। परान एह मकान में बसेओला मोसाफिर हउए। आ भगवान एह मकान के मालिक हवन। जब मालिक के आदेश होला त मोसाफिर मकान खाली क देला। तें एही उमीर में पुरनिया नियन बतिआवे लगले बबुआ। उनुका माई के आंख में फेनू लोर भर आइल। गाँव के सब केहू कहे लागल-तोहार शेखर ठीक कहताड़न।

(२)

शेखर आपन घर सम्हार लिहलन। सहारा में मामा के घर मिलल। मैट्रीक में ऊ पहिला असथान ले अइलन। मामा के सलाह प उ कवलेज में नाव लिखा लिहलन। दू-चार महीना मामा मामी के पियार दुलार में तनिको कमी ना रहल, बाकी फेनु अंजोरिया के चान अइसन घट के अमवसेया हो गइल। पियार दुलार के सिरिफ फरज निभावल जाए लागल। मामा के गावं से कवलेज पूरे चार कोस दूर रहे। आवे जाए के साधन बस आ रेलगाड़ी दूनों रहे। लेकिन आरथिक अभाव सतवले रहे। तबो उ कवलेज रोज दिन आवत जात रहन। उनुका में होनहार विदारथी के लछन घर क लिहले रहे। जहां देंह के मेहनत से काम हो जाए ओला रहे, उ देह के मेहनत से तनिका ना सकुचास। उनुका कवलेज जाए ओला रोटीन में पैदल पहिला असथान ले आवें, आ कवलेज से अइला के बाद दू चार गो तवा प सेंकल बासी रोटी, दोसर असथान। जब तलक आपन बल

www.bhojpurisahityangan.com

रहल तब तलक बासी रोटी बाल बांका ना कइलस। बाकी जब एगो अखाड़ा के लड़इत से हाँथ मिलउवल हो गइल त उन्हुकर बल अजमा लिहलस आ दशहरा के छुट्टी से दू चार दिन पहिले पछाड़ दिहलस। बेमार हालत में शेखर घरे अइलन। हट्ठा कट्ठा शेखर के जगह बेमार शेखर के धसल आंख, झंउसाइल मुंह आ पीअर देंह देख के माई के आंख में लोर भर आइल। उनुका मुंह से एकाएक आइल-शेख....र। आगे शबद के जगह लोर बहेलागल शेखर माई के लोर पोंछत कहलन- हम दशहरा के छुट्टी तक ठीक हो जाइब, माई। शेखर के माई शेखर के सेवा में लाग गइली। एकक दिन बाद शेखर के तबियत सुधरे लागल आ उ पहिले ओला शेखर हो गइलन। तब तक दशहरा के छुट्टी खतम हो गइल आ फिर मामा के गांव चल गइलन।

(३)

एम. ए. के पढ़ाई शुरू करे से पहिले शेखर आपन आ अपना छोट भाई अर्जीत के बिआह क दिहले रहन। जब अर्जीत शहर के कवलेज में पढ़त रहन ओह घरी डाकिया शेखर के नाम से चिट्ठी लेके आइल रहे। ऊ चिट्ठी शेखर के बी.डी.ओ. के पद प चुनइला के रहे। अर्जीत चिट्ठी लेके मामा गांव गइलन आ भइया के गोड़ छू के चिट्ठी दिहलन। शेखर बिहान गाड़ी ध लिहलन आ जाके अपना पद प योगदान कइलन।

शेखर के बी.डी.ओ. भइला तीन साल हो गइल। ऊ आपन पूरा परिवार अपना भिरी रखले बाड़न। अर्जीत के औरत मालती इहें कुल पनरह दिन से बेमार बाड़ी। शेखर अर्जीत के समुझा के ऑफिस चल गइलन। मालती के बेमारी गते-गते तरक्की करे लागल। अर्जीत मालती के लेके असपताल चल गइलन। भउजी एह स्थिति में भला डेरा कइसे रहस, मन ना मानल उहो असपताल पहुँच गइली। माई देवी देवता के मनौती करत रही कि पतोह के तबियत ठीक हो जाव। मालती के हालत अखिरी खराब बाटे, उनुका अब खून के जरूरत बा। संजोग कतना निमन कि अर्जीत के ससुर ओही असपताल में छोटका डॉक्टर बाड़न। आपन बेटी खातिर ऊ एको उपाय से बाज नइखन आवत। तबो दोसरा ओरे रोग तरक्की करे से बाज नइखे आवत। मालती बेहोश

www.bhojpurisahityangan.com

बाड़ी सब केहू मौन सधले बा। बड़का डॉक्टर सबकर बारी-बारी से खून जांच करताड़न। लेकिन केकरो खून के ग्रूप मालती के ग्रूप से मेल नइखे खात। चिन्ता जनक इसथिति में अजीत अपना भइया के फोन कइलन कि भइया, मालती एह दुनिया में कुछ पल के मेहमान बाड़ी, रउआ जल्दी आके भेंट क लिहीं।

शेखर तुरन्त आ गइलन। आ घबराइल बड़का डॉक्टर से मालती के विषय में पुछलन। बड़का डॉक्टर सिरनवइले कहलन-मालती के रउआ दुरभाग समझीं शेखर बाबू कि एह ग्रुप के खून असपताल में नइखे आ राउर परिवार के केकरो ग्रुप नइखे मिलत। शेखर बड़का डॉक्टर से आपन खून जांच करावे चल दिहलन। अजीत के सुसर आ असपताल के रूढ़िवादी विचार के लोग बतिआवे लागल कि शेखर बाबू भसुर हईं, ग्रुप मिल गइला के बाद ऊ खून मालती के कइसे चढ़ी ?

एतना बतकही के बीच शेखर आ गइलन। सब केहू परमपरा के बतकहीं भुला गइल। जइसे जिनिगी रूढ़ीवादी परम्परा से जीत गइल। सभे एक स्वर में पूछल का भइल ?

का भइल एकर जवाब डॉक्टर साहेब दिहब शेखर चुप हो गइलन। शेखर के मौन देख के सभे अउरी भारी अनेशा में पर गइल। आ बड़का डाक्टर के इंतजार करे लागल। सभकर मउनई परान के भीख मांगे लागल। बड़का डॉक्टर कुछे देरी में आ गइलन। सभे एक स्वर में पूछल-डाक्टर साहेब मा.....ल....ती। बड़का डाक्टर अपना छोटका डाक्टर के देख के मुसकइलन आ शेखर से कहलन मालती अब बांच जइहें, जी विसवास करीं जा, उ लगले होश में आ जइहें।

जादे पढ़ला लिखला से का भइल, बदलाव केहू केहू में आवेला, सभका में ना। ई परकिरति से मिलेला। वदलाव खातिर पुरान से नया के संघरष करे के जरूरत जुटल रहेला। रूढ़ीवादी विचार छोटका डॉक्टर के फेनु बले ध लिहलस आ ऊ पुछलन-मालती के खूनन के ग्रुप कहां से आइल ह, सर ?

www.bhojpurisahityangan.com

बड़का डाक्टर शेखर प नजर घुमा के कहलन-शेखर बाबू के ग्रूप मालती के ग्रूप से मिलत हउए। शेखर बाबू खून दिहले हईं। संजोग ठीक बा।

छोटका डॉक्टर मतलब अजीत के ससुर अचरज में पर गइलन। आ कहलन-सर, शेखर बाबू आ मालती के बीच भवह-भसुर के नाता बाटे। भारतीय परमपरा में भवह-भसुर के परछाईं परला के दोष मानल जाला। ई बहुत लमहर भूल भइल बाटे। परमपरा एह गलती के कबो ना माफ करी।

एतना बतकही के पहिले मातली होश में आ गइल रही। आ सभकर बतकही सुनत रही। शेखर पुरान परमपरा के लतार के समुझावत आपन विचार दिहलन- 'बाबूजी' जवन परम्परा परछाई परला के दोष मानेला, उ आके रउआ मालती के काहे ना बचवलस। रउआ खुद सोचीं कि जवन अदिमी के हमारा आ रउआ से कबो के कवनो लासतांगा नइखे, उहो अदिमी असपताल में जाके देश आ लोग के कलेआन खातिर खून दान कर रहल बा। ई राउर भारी भरम बा बाबूजी, आ अइसने अइसन परमपरा में सुधार के जरूरत बाटे।

ई सब बतकही बेड प परल मालती के अनस नियन आ बेकार लागल। तनि हद तक ऊ परम्परा के मान परजाद के लर्कार खेआल क के कम स्वर में कहली- हं बाबूजी एह परमपरा में कुछ सुधार के जरूरत बाटे, रउआ धन बानी, आ रउओ धन बानी डाक्टर साहेब। मालती के बोली सुन के सभे खुश हो गइल। आ ई कहत मालती के देखे बदे भीतर चल दिहललन कि-शेखर बाबू रउआ धन बानी।

❁

--गिरिडीह, झारखंड

www.bhojpurisahityangan.com

लघु कहानी :-

ई⋯⋯⋯का⋯⋯⋯हो

रामरक्षा मिश्र 'विमल'

'ई⋯⋯का ⋯⋯हो,– एगो सवाल वा, जवन अवहूँओ हमरा दिमाग में हलचल मचवले वा आ हम ओकर सही जवाब नइखीं खोजि पावत।

ओ दिन चाचा का दुआर पर से आवत रहीं। राहि में समासू आ कटहरी-दूनों जना खड़े-खड़ी बतकही नधले रहन। पाक्का प होखेवाली कहनी बतकही रहे। हमहूँ शरीक हो गइनी आ दोसरा दिने सुने खातिर पाक्का प पहुँचे के वादा कइनीं, फेरु चलि दिहनीं। अभी दुइयो डेग ना चलल रहीं कि मुनिया लउकलि। रोज के आदति, एक चटकन आजो ओकरा पीठि पर जमा दिहनीं। ऊलजइला अस गते-से टुसुकलि-ई⋯⋯का⋯⋯हो ? हमारा त जइसे काठ मार दिहलसि, हम ओकर मुंह ताके लगनीं।

ओकरा सवाल पर धियान जाते हमार रोंआ- रोंआ काँप जाता। ऊ अवो ऊ लइकी ना रहि गइल रहे, जवन पहिलहूँ रहे, तबे नु लजा के बोलले रहे। हमरा याद आवता- कबो ऊ पान-छह बरिस के रहे आ गेड़-झागर में ढेर रुचि राखत रहे। हम नंबर एक खिसहा, जबे ना तबे खिझा दिहीं। आ, एगो हमार सबसे खराब आदति कि जेकरा पर हमार ढेर नेह रहेला, ओकरा से हम दुलार का बदले चटकनन आ मुक्का से बात करेनी। टोल-महाल का अउर लइका-लइकी का संडे-संडे ओकरो के दू चटकन धरा दिहीं। ऊ 'निहितनिऊ' 'मटिलगनू' टुअरू तोहरा के काली जी के बलिए देवि कहत-भनभनात चलि जाइ आ हम थपरी पीटि के हँसे लागीं।

असहीं दिन वितत गइल आ ऊ गारी दिहल छोड़ दिहलसि। ओकर आदति छूट गइल, बाकिर हमार ओसहीं रहि गइल।

ओ दिन एक-बा-एक धियान गइल रहे। तेरह-से कम के ना भइल होई ऊ। जउवन के लच्छन कुछ-कुछ नजर आवे लागल रहे। ऊ जरूर अब जवानी के भार महसूस करत होई, काहें कि ओ' के महसूस करते का त लाज हाया के अरथ बुझाए लागेला।

दू-तीन महीना पहिले असहीं अकरखन मिसिर के जोगनी (पाँच बरिस के हो गइल होई) भी कहले रहे-'ई⋯⋯का⋯⋯हो ? लइकिन के खेल में काहें परेलऽ ? आ हम खीसिन्ह पगुरी माजत लखेदि लेले रहीं ओकरा के, आ भेंटइला प मुवलि के मारि मरले रहीं। बाकिर हमरा कथा नायिका के इ⋯⋯का⋯⋯हो? के धियान अवते रोंआ-रोंआ खड़ा हो जाता-'का सोचिके ऊ कहले होई ?

एह घटना के वितला दू दिन हो गइल बा। लिखे के चहला का बाद भी समय ना मिलला कारन हम लिखि ना पवलीं। बाकिर, एह अंतराल में सैकड़न्हि बेरि हमार संजमित मन भावुक मन से खिझावे के लहजा में पूछि चुकल बा, 'विमल ! ई·····का·····हो·····?' ·····आ हम कटि के रहि गइल बानी, रोंआ गनगना गइल बा।

❁

कैलिम्पोंग (पं.बं.),
केन्द्रीय विद्यालय,

समीक्षा :-

बतकही

ब्रह्मेश्वरनाथ तिवारी

डॉ० नन्द किशोर तिवारी के 'बतकही' पढ़े के मिलल। लेखके मनले बाड़े कि 'लइकपन से लेके अबतक इनकरा के अदिमी बनावे खातिर घर-दुआर से जवन संस्कार मिलल ओह में आच्छा बुरा दूनो रहे। स्वाध्याय के दहकत आँच से टेघरन भी ओह में मिलल। कुल्ही से अन्तः करण अवले भरात रह गइल। धीरे-धीरे खलिहा करे खातिर एह किताव में दस गो रेहँट के बालटी डालल बा। बलटी पुरान, जंग लागल, चुअहा, बाकी अपना अँटाव भर कम-बेसी ढरकत, गिरत-फेंकात थोरिका पानी से ई 'बतकहीं' के चासनी तइयार भइल बा।' हमरा बुझात बा, ई 'बतकही' ना गुनावन ह। जिनिगी के चढ़ल धार पर चढ़ावल सान ह, जेकरा में सभ शास्तर-पुरान, वेद-वेदान्त, इतिहास, भूगोल, सुनल समुझल बातन के बानगी आउर आपन कथनी के मिलान कइके एगो अइसन जिनिस तइयार कइल गइल बा जवन भोजपुरी माटी के सांस में अचके समा गइल बा। कइसे कहल जाव कि ई दसो बतकही में परत दर-परत आपन देहाती जिनिगी के टँगाइल सांस पर टाट के बखिया चढ़ा के साटनो से चिक्कन आउर हलुक, मोलायम बिछावन सजा दे गइल बा। बिना कवनो उतजोग के आपन बचपन से जवानी के अनगिनत दिनन के भोगल, जोगल आ सँगोरल इयाद के एके जगहा बटोर के अमर बेल बना दे गइल बा। जगन चा के मोर बाजा होखे भा इसकूल के जुलूस-सगरे सुरसती मइया के भरल-पूरल सवँसार में रचइता के साँस टँगा जात बा। सेयान भइला प गेयान भइला प अइसन बुझाता जइसे सभ बेसाहल जिनिस पूछ-पाछ के इनका लगे बटोर देल गइल बा। पहिले सुमिरि मइया सरधा हो, में ऐतरेय ब्राह्मण से लेके ऋग्वेद, देवी भागवत, सरस्वती व्यास, महाभारत, पुराण के कुल्ही गेयान बटोर के लोकमानस में बइठल एह अच्छर के महिमा के बरवान सहित सब खट्टा-मीठा चासनी बड़हन सुघराई के साथ लोक भाषा भोजपुरी में उतरल बा, ई लेख के भाव, भाषा, गेयान आ पहुँच के एगो नीमन बनगी कहल जा सकेला।

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी हमनी के रोइयाँ-रोइयाँ में अइसन रचल-बसल बा कि एकरा के माई के अँचरा लेखा कवो अपना से अलग ना कइल जा सके। संविधान के आठवीं सूची में एकरा के राखल जाई कि ना, ई त एगो राजनीति के विषय बा, देश के चलावे वाला राजनेता के दिल-दिमाग में भोजपुरी भाषा के बढ़ावे खातिर कवनो उतजोग लगावल जाई कि ना, कुछो ना कहल जा सके। बाकिर एकर केतना लम्हर हाथ बा, कइसन बउसाव बा कि संसकिरित भाषा से लेके अंगरेजी भाषा के शब्दन के पेट में अचके बइठ के गुदगुदा रहल बा। बड़ी अचरज के बात बा कि बोली में जिन्दा रहेवाला भोजपुरी में ई कइसन सामरथ बा कि संसार के धनी से धनी भाषा में सेंध लगा देत बा। विदवान विचारक डॉ० तिवारी जी कुछ भोजपुरी शब्दन के मूल स्रोत के खोज कइके ओकर जड़मूल के अता-पता दूसरा भाषा में ढूँढ़े के कोशिश कइले बाड़े आ सिद्ध करदेले बाड़े कि भोजपुरी कवनो गाँव-गँवई के गँवारन के भाषा ना ह। एकर बींज रूप लोककंठ में जेतना सुधराई से रस-बस गइल बा कि हजार बरिस आगे तक कवनो भाषा विग्यानी भा समुझदार अदिमी एकर महातम के झुठिया ना सके। सूक्ति आ मुहाबरा के खान बा भोजपुरी में। उत्तर भारत के अनेकन अस्थान में भोजपुरी आपन पाँख पसार के अनेक भाषा आ बोली के सिंगार कर रहल बिया। सूर' तुलसी रैदास, मीरा, कबीर, नानक, दादू दयाल से लेके आजुकाल्ह के कवि लेखक के कवनो अइसन रचना ना होखी जवना में भोजपुरी के सब्दन के चासनी आपन चटक ना देखावत होई।

तिरसरका निबन्ध 'कि बरधे' में निबन्धकार अपना माटी के पूजा के बहाने 'बरध' के गुनगान कइले बाड़े। वृषभ-वाहन शंकर आ गो पालक कृष्ण के साथ भारत के गिरहथी में इनकर भागीदारी पर बड़ा गुनावन भइल बा। घाघ-भड्डुरी के कहावत में खेती के साथे साथे तिथि नछत्तर आ बरध के का जोग होला, भारत के सधल किसान एकरे आधार पर आपन सभ गिरहथी के सरजाम जुटावेले। आजुकाल में भले मसीन के महातम बढ़ गइल होखे, बाकी बिना बैल के खेती के एको धूर ना संभारल जा सके। बरध आ मरद पर जेतना नीमन विचार आ एकर महातम बतवले बाड़े ऊ सांचो सराहे, बेसाहे लायक बा। संसकीरित के असलोक से लेके लोक प्रचलित दोहा-चउपाई के संगीरहा डॉक्टर तिवारी जी अपना बात के सिक्का जमा देले बाड़े।

इहाँ के तिसरका निबन्ध 'नाँव' बा। नाँव, गाँव आ भगवान के छाँव-तीन पर एह सवँसार में अदिमी भा मानुस के ठौर बा। नीमन भा जबून के पहिचान नाँव, गाँव से ही होखेला। एह दुनिया में केहू के नाँव चलेला, ओकर करतब के सहारे। करतब के मामूली चूक नाँव के मेटा देला। नाँव के लेके एह लोक में केतना तरह के विधि-निषेध, छल प्रपंच भ अरथ-अनरथ, निन्दा-बड़ाई

www.bhojpurisahityangan.com

होत बा, एकर बरनन बड़ी सुघराई से तिवारी जी कइले बाड़ें। अपना बात के परतोख राखे में भा बातन के आगे बढ़ावे में कहीं-कहीं अइसन चुटकी के चासनी पिला देत बाड़े कि कठिनों बात फूल जइसन चिक्कन आ हलुक बन जात बा।

अब आईं चउथका निबन्ध 'सतुआ' पर। 'सतुआ' से सतुआन' एगो बरत महातम बन गइल बा। कहाउत ठीके कहल गइल बा-'सान खाईं सतुआ पकान खाईं रोटी'। एह निबन्ध में विदवान विचारक एके साथ एक तीर से दूगो शिकार कइले बाड़े-माई के आ सतुआ के बखान। माई के पूजा में बचपन के परल सभ संस्कार इनका सउँसे निबन्ध में दरपन में परछाई लेखा झलकत बा। कहीं-कहीं त भक् से अंजोर कके अगेयान के अन्हार उधिआ देत बा। माई-बाबूजी के सिखावल-बतावल गियान के जे अपना जेहन में, जिनिगी के गाँठ में बांध लेला, अपना हर आचरन में उतारे के कोशिश करेला ऊ एक दिन सँवसार में समरत्थ पुरूख बन जाला। जवन कुछ माई के गोदी में लरिकाई से बइठ के जाने के मिलेला उहे जिनिगी के असली मोती चुनेला। जे अदिमी एह अमरित के एको बूँद अपना कंठ में उतार देला ओकर संउसे जनम सुफल हो जाला। सांचहु ई 'सातू' सतुआन के इयाद नइखे करावत, ई त माई के ममता के, तेआग तपस्या के, कहानी उजागर करत बा। सतुआ ठीके संतोख के भोजन ह। ईहे भारत के सुअन्न ह। गरीब-अमीर दूनो के जीए के सहारा ह। एही सतुआ अइसन गुजर-बसर करेवाला साधारण अन्न के तुलना महटर लोगन से कइल गइल बा। माहटर लोग ओतने बदनाम बा जेतना सतुआ। एह सवँसार में जतने जे अच्छा बा, जरूरी बा, समाज ओकरा के ओतने बदनाम करिके रख देला. ईहे आज के जुग के सच्चाई बा। लेखक एह में गुनावन कइके एकरा के साबित कर देत बाड़े। एगो निबंध के मथेला बा-'गारी'। गारी के बारी होला। कुछ लबारी में कुछ लाचारी में कुछ विरोध में तइयारी में त कुछ शादी-बिआह के इयादगारी में। सांच पूछीं त गारी परतच्छ झूठ ह कि सांच ह, ई अनुसंधान के विषय हो सकेला। एकरा पर नीमन खोजबीन कइला से एकर असली राज खुल सकेला। अइसे एकरा गुन-दोष, जरूरत-बेजरूरत पर एगो बड़हन किताब छापल जा सकेला। चरन दादा के गारी लइकन खातिर केतना अनंदित कर देत रहे एकर बड़ा नीमन बरनन बोध करावल गइल बा। एह में एके साथ ईमिरत आ बिख दूनो सनाइल बा। ई अदिमी के दिमाग के उपज ना ह, ब्रह्मा जी के बनावल तत्वज्ञान के चिन्हानी है। निबंधकार अपना कथन के परशंता में केतना सजावट कइले बाड़े-सांचो के ई गारी एह संसार खातिर ओतने जरूरी बा जतना नारी। ईहे दूनो से जगत गतिमान बा,.....गारी सरापे खातिर ह मुआवे खातिर ना। ई मंगल तत्व ह। स्वारथी समाज के शिक्षक ह ई गारी। इ लोक के बेद ह, संवेदना के छेद ह, ना जानकार खातिर खेद ह।

www.bhojpurisahityangan.com

आ जानकार खातिर सुवेद ह। मुरुख खातिर महामारी ह, पंडित खातिर बेमारी ह, आ संत खातिर सोहारी ह। हमरा बुझाता जबले सृष्टि बा तबले ई लोककंठ में रच-बस गइल बा। क्रोध आ खुशी दूनों के लगाम ई गारी बनाके बरहा अदिमी के साथे लगा देले बाड़े। सांचहु निबंधकार तिवारी जी के सोच के दाद देल जा सकेला।

एगो दोसरका निबंध के विषय बा गमछी। लरिकाईं से गमछी लेबे के आदत के शुरुआत माई से ही भइल बा। कान्हीं पर गमछी आ हाँथ में लउर भोजपुरी माई के चिन्हानी ह। ई संस्कार हजार बरिस पहिले से हमरा समाज में डालल गइल बा। ई मरजादा के चिन्ह आ रछेया के कवच मानन गइल बा। जेकरा सिर पर गमछी, पगरी, टोपी , रूमाल भा मफलर, गुलबन्द नइखे ओकर कवनो शुभ कारज में मरजादा ना देखल जा सकेला। भारथ के गमछी संस्कृति महान धरोहर के रूप में लोक जीवन में ससर-पसर के आपन पहिचान बना देले बा। बाकी आजुकाल्ह के जवान के माथ उघार राखे में बड़ा मर्दानगी के बोध होखेला। कारन ई बा कि ऊ विदेशी पोशाक में आपन शान समझत बाड़े। उनकरा के मालूम नइखे कि बसतर में गमछी आ बरतन में बरगुना घर बाहर सगरे एगो नीमन संघतिया लेखा जरूरत पर काम आ सकेला।

समुझदार डाक्टर तिवारी जी शब्दन के पोर-पोर में विचार के भाव के फूल भरके निबंध में जान डाल देले बाड़े। तरकारी बान्हे के काम होखो चाहे तुरावल बछरू के रोके के उपाय कइल जाव, गमछी बड़हन काम दे देला। नेहाये-धोआये, ओढ़े-बिछावे, संध्या गायत्री करे में गमछी के कवनो लम्बरदार चीझ ना आज तलक बनल ना आगे बनी। देहाती अदिमी के असली पहचान ओकर गमछी ह। सांचहु ई भारथ के संस्कृति के प्रतीक बन गइल बा तबे त पंडित लोग के धोती-कुरता के बदले गमछी दान करे के महातम बनावल गइल बा। सीत, धाम आ बरखा में गमछी के जरूरत परबे करेला। सादी-बिआह में कवनो मंगल के काज बिना कपार पर गमछी रखले ना हो सके। लावा मेराई से लेके हरदी-धान बांटे तहाक एकर ब्योहार कइल जाला। अपना पोता टू-टू आ प्रिंसिपल सरन साहेब के उदाहरन देके लेखक महोदय अपना बात के बड़ी सफाई से अपना ईयादगारी के ताजा बना देले बाड़े। सबसे ज्यादे हिरदा में गुदगुदी पैदा करेवाला भाव त ओहिजा पैदा कर देले बाड़े जहवाँ बेटी बहिन अपना ससुरा जा रहल बाड़ी। उनकर गोड़ झारे खातिर गमछी के ईयाद हो जात बा। घर के लक्ष्मी जब जायें के तइयारी में बाड़ी त माई के सिखावन के ना मानी। लछिमी जात बाड़ी गोड़वा के धुरिओ त झारलऽ। एही कारन से फरबऽ फुलबऽ। भाई डोली भीरू जाके एही से गमछी से गोड़ के धूर झारेले। खर-खरिहान में ढेरी के जोखाई में कपार पर गमछी जरूरी राखल जाला।

www.bhojpurisahityangan.com

लेखक आखिर में गरब के साथ घोषना करत बाड़े-ई सरीर माई के आँचर आ बाबू जी के गमछी से पोसाइल बा। सुखाइल फूल अइसन बचपन के शरीर के ढांक के एही से लोग राखल। मुँह नाक साफ कइल। धूर झरलस आ कँदई लपटाइल गोड़ के केसर अस मान के एही गमछी से सफइया कइलन। आँचर आ गमछी दूनो परेम के परगट रूप ह। निबंधकार तिवारी जी के बात के मर्जाद गमछी के छोर में जेतना सुघराई से बान्ह देल गइल बा ऊ साचहुँ निबन्ध के रोचकता में चार चाँद लगा देत बा। जब अंजुरी भर अच्छत से बर-कन्या के जिनिगी विआह के पबित्तर बन्धन में बँधा जाला त बचपन के जोगावल, संगोरल ईयाद के ई बानगी 'गमछी' जइसन निबन्ध के कइसे जीवन्त ना बना सकेला। हमरा समझ से गमछी में गुन बहुत ह, सदा राखिए संग। सदा राखिए संग भंग कारज में कबो न होखें। सतसंग-बतसंग समइया में भइया रे, रंग देखाई चोखे।

'सैकिल' डाक्टर तिवाजी जी के आठवाँ निबन्ध बा एकर मजा उहे ठीक से जान सकेला जे एकर सवारी कइके सुख दुख के अनुभव कर लेले बा। लेखक चालीस बरीस से ऊपर होत होई एकरा पर गुनावन करत जिनिगी के ओरवा देले बाड़े, बाकी एकर मरम-महिमा के गुन ओरा न सकल। मन में सैकिल पर इनकरा महाकाव्य लिखे के सनक सवार हो गइल रहे। महापंडित देवेन्द्र नाथ शर्मा जी के एही सैकिल पर लिखल निबन्ध पढ़े के मौका मिलल रहे बाकी पईंचा उधार के बेआन इनकर बरोबरी ना कर सकल। इनकर साइकिल पर चढ़े खातिर जेतना परान छछनल बा ओकर दवाई उनकर निबंध ना देल। जरत हिआव के मेटावे के बउसाव केहु के पास ना देख सकले। तबले एगो इटैलियन भाषा के सुन्नर उपन्यास 'सायकिल थिब्ज' पढ़े के अवसर मिल गइल। फिर त महाकाव्य लिखे के मन छोट हो गइल। एगो सयकिल चोरावे वाला चोर के बरनन से समूचा घटना चक्र इनकरा पर कलिकाल के मइल लेखा बेध देलस कहीं हमहूँ चोरी के अपराध में सैकिल आ आपन देह दूनो के बाजी हार के चारो खाने चित ना हो जाईं- इहे डर इनकरा से एगो बड़हन काम करावे में बाधा डाल देलस। खैर, समेया समेया के संजोग अदिमी में बड़ा उतार-चढ़ाव ला देला। फिर भी बचपन से, बाहर-तेरह बरिस के उमिर से ई सैकिल इनका अंगे लागल बा, ओकर महातम सहज में भुलावल ना जा सके। भुलाई कइसे ? अपना सैकिल के इतिहास बतावत बानीं तिवारीजी 'एकर सरीर इंगलैड में बनल रहे। ऊ आजुवो बिआ। कुछऊ नइखे भइल एकरा में। कबनो अंग में खरावी भइल त बदला गइल। लेकिन हैंडिल पर ओइसहीं इंगलैण्ड लिखल बा। ई सहचरी हमार ताकत आ बदमासी, रोज के छन-छन के सोच के अपना चलत चाका पर लिखले बिया। ओकर निसान पृथिवी माता के छाती पर बा। सड़क आउर, डंड़ार, लाठ, पगडंडी सगरो ई सैकिल चलल बीआ। ठेहुना

www.bhojpurisahityangan.com

मर घूर आ चूभल पथर के गीटी में आ फिरू चीकन अलकतरा से मढ़ल संड़को मर चले में एकरा एतराज कबो ना भइल'। पटरी से तनी उतर के हमहूँ इनकरा मात के साफ कर दिहीं कि इन्हा के पोस्ट ग्रेजुएट के पढ़ाई करे के टयेम में मटना वि०वि० के पी. जी. हास्टल में ई मरदूद सइकिल के साथे रोज रानी घाट ले दरभंगा हाउस के अपना हिन्दी विभाग में इहे लछमिनिया सइकिल के चमकावत जात रहन। ई टूटल खाट पर चानी के बखिया हमनी के रचिको ना नहात रहे। एक दिन लछमिनिया के साथे-साथे इनकरो खूब मरमत कर देलीं ना, बाकी उ सइकिल कुछ दिन गायब होके फेरु आपन लेदर मुंह देखावे में कामयाब हो गइल। पता ना उ जोगावल जिनिस आजो बा कि इनकर संग त्तियाग देलस। भगवान करस ओकर दुर्गति देखे के संजोग ना मिले।

एके साथे ई जरूर कहल जा सकेला कि डॉ० तिवारी के भोगल छन आ जोगल सैकिल से इनका जिनिगी में संग्रही वृत्ति के सूत्रपात भइल बा। सादा जीवन उच्च विचार के धनी निबन्धकार के जिनिगी में एह सैकिल के जोगदान कबो ना भुलावल जा सके। सैकिल बिग्यान के देन जरूर ह बाकी एकर जुग ओरा गइल आ जीप, टैक्सी, कार, मारुति से लेके बस हेलिकोप्टर, हवाई जहाज जइसन तेज सवारी आ गइल। समय आ दूरी पर आज के अदिमी विजय पा गइल बाकी 'सइकिल' के अस्थान दोसर कवनो सवारी ना ले सके। सइकिल सांचहु ईर्ष्या के विषय बा। धन्य बा ई सवारी जे कमजोर खातिर बवना भगवान के गोड़ हो गइल। देहात आ सहर के दूरी पारे में लंका के पुल हो गइल। हालैंड के बाद भारथ में सइकिल के मरजाद आजो जस के तस बनल बा। सइकिल दहेज के सीमा के नीचे दब जरूर गइल, बाकी ई अदिमी के संगे बोरा पाटी, दूध के ड्रम, खाद ढ़ोवे में आजो ओतने चलनसार बा। निबन्धकार अपना एह निबन्ध में ठीके बतवले बाड़े कि सइकिल दोसरा के हाथ न देबे के चीझ ह। सास्तर, लेखनी, किताब आ मेहरारू लेखा जेतना जोगा के सइकिल के रखल जाई ओतने एकर जिनिगी आबाद रही। ई कतना गढ़ के गुफा के जंगल के, नदी के दरसन करवलस आ लेखके के छोट जीवन में सरल अधेयाय जोड़लस, कहे में लाचार बाड़े। सइकिल के मरजाद भले आज कुछ कम हो गइल बा बाकी जब संसार में तेल के भंडार खतम हो जाई, कूल्ही सवारी माटी हो जाई तब सइकिल जुग के सुरुआत हो जाई। एह सवारी के जरूरत हरदम बा आ आगे भी बनल रही, एह में रचिको सन्देह नइखे।

विदवान निबन्धकार डॉ० तिवारी के लेखनी के एगो विषय बा- होलरी। होलरी बसन्त के हुलास आ लइकन के सुतार ह। एकरा पीछे लोक वेद आ पुरान दूनों के बड़ा नीमन संजोग बतावल जाला। भारत के राष्ट्रीय पर्व में होली दीवाली आ दुर्गापूजा में सबसे अधिक आनन्द आ मउज होली में पावल जाला।

www.bhojpurisahityangan.com

ओहु में होलरी भा समत के सुतार त लरिकन के संगे मृदंग बजावे लागेला। पचमी के होलरी गड़ाते लरिकन में हुहकार मच जाला। सेआन आपन गोईंठा अगोरे में सचेत रहेलन आ लरिका चोरी से गोईंठा लकड़ी चोरा के समत में डाले के उतजोग में रातभर रतजगा करे में खुशी मानले। पौरुख आ आनन्द दूनों के तसबीर होलरी में प्रतच्छ हो जाला। आचार्य शिवपूजन सहाय के आंचलिक कहानी देहाती दुनिया में माता का आंचल में जवन लरिकन के शेख चिली आ बदमास सुभाव के बरनन भइल बा, होलरी में उहे संजोग देखे के मिलेला। अपना बचपन के इयाद तरोताजा करे में लेखक के ई निबन्ध बड़ा सटीक, स्वाभाविक आ हिरिदा के छुअता। भगत प्रहलाद के जीवन एह निबन्ध से जुड़ल बा। समत अनेआय, अत्याचार के विरोध में उठल एगो तूफान ह।। होलिका जइसन राछछी के जरा के सत्य के जीत के बान्हेल सभ सरंजाम ह। समत शव कें जरावे वाला मुरुदघटिया ह। पाँच गोईंठा आ सवांग पाछे एक-एक रेंड के होलरी बनवले सव दाह-क्रिया के मोताबिक आपन-आपन हिस्सा लेके गाँव के अदिमी समत फूँके पहुँचेले। निबन्धकार एकर बड़ा बारीक बरनन करत बाड़े-समत अपने स्वाहा होके सभकर भीतर समा गइलन। ई फुँकइलन का हर अतमा में समा गइलन। सांचो कवनो अदिमी ना मरे, ओकर विचार ना मरे, समत मर के हर साल जी जा ताड़न। समतजी के विसेसन बा गोसाईं। गोसाईं गोस्वामी के अपभ्रंस ह। माने इन्द्री पर जेकरा अधिकार होखे, इन्द्रिय सुख उहे दे सकेला। समत बाहरी मइल के ढेर के जरा देलन। जवन मंगाता बा उ नारदी वृत्ति ह। संसार में सुख इन्द्री संजम में बा, इन्द्री सुख में ना। निवन्धकार एह निवन्ध के माध्यम से एगो बड़ ग्यान के बात बतावे के कोशिश कइले बाड़े। अंत में जवन सचाई बा ओकरा के खोल के अपना बात के असलियत परगट कर देत बानी- 'कतना आनन्द रहे होलरी में, एकरा दिन में। अब त न गाँव ऊ रह गइल ना मन, ना होलरी आ ना ऊ परेम। अब ओह संमत गोसाईं से रामजी आ गुरुजी खातिर परेम मांगत बानी।

पुस्तक के अंत में कबीर के मूल वाक् 'मांगत सबकी खैर' निवन्ध पर विचार कइल जाव। जीवन के सार सत्य आ सास्तर के निचोड़ एह निवंध के विषय बा। कबीर के सम्पूरन जीवन में जेतना उतार-चढ़ाव संघर्ष या तियाग देखे के मिलल उ भारत के संत परमपरा के एगो अजब इतिहास बना देलस। बाभनी विधवा के कोख से नजायज संतान के पैदाइस भइल, एगो जोलाहा के परिवार में पालन पोसन भइल। सेयान भइला पर धर-गिरस्थी बसावल गइल। बेटा-बेटी कुल्ही पैदा करके कबीर संत के उपाधि पवले। तीरथ, व्रत, पूजा-पाठ रोजा नमाज एकऊ ना करिके रात-दिन हिन्दू मुस्लिम के भरपेट गरिअवले। पथर पूजा आ रोजा-नमाज के, अजान के खिलाफत कइले। माया

www.bhojpurisahityangan.com

में रहि के माया के कींचड़ में देह ना धँसल। चमिटा भा जोगिया रंग में चादर कवो ना रँगाइल। पढ़ाई-लिखाई, सास्तर-पुरान के कवो कवनो जानकारी ना भइल। एतने ना सबसे आपन घर जराके आपना साथे चले के आवाज लगवले। जेकरा आपन घर फूँके आवत होखे ऊहे हमरा राह के राहगीर बन सकेला। समाज के हर कोना में झांक झांक के विद्रोह के बिगुल बजावेवाला कबीर जब मरले त हिन्दू, मुसलमान में उनका लास खातिर युद्ध ठन गइल। हिन्दू जरावे के सोचे त मुसलमान दफनावे के। फैसला भइल कि लास के चादर से ढँक देल जाय। भिनुसहरे लाश फूल बन गइल आ ओकर सगन्ध से सऊँसे अस्थान में भइल गइल। संसार में अइसन उदाहरन बहुत कम मिलेला। अकबर के जमाना में कबीर आ वर्तमान में महात्मा गांधी दूनों परोपकार से दोसरा के उठावे जगावे में आपन जिनिगी के हूम कइ दिहले। सभकर खैर दूनो मनवलन। काल भी उनका आगे हार खा गइल। कबीर गुरु के हरदम रट लगवले, चिलइले लेकिन उनकरा गुरु के नाम पता आजतक केहू ना जानल। दुनिया अपना जात, गोत्र गोहवर पर गरब करता, बराबर आपन से अलग कइके दुनिया के देखत बा। कबीर अपना के सभका में मिला के देखलन, एके सधला से सभ मिल गइल। संत त बनलन बाकी सन्यासी ना भइलन। गिरहत बनके सउंसे सनसार के अमरित पिआके चल देले। निबंधकार के नजर में इहे धरती के बेटा के मनुसाव ह, इहे जनम लेला के मोल ह कुल मिला के 'बतकही' विद्वान निबंधकार तिवारी जी के जिनिगी के एगो अइसन आपबीती बा जवन जगबीती बनके सम्पूरन भोजपुरिया समाज के हिरदा में गुदगुदी पैदा कर देत बा। एह निबंध-संग्रह खातिर डॉ० तिवारी जी के बहुत बहुत धन्यवाद। आगे अइसन सोच कागज पर ढेर जगह बनावे इहे कामना बा।

❁ *मंगलायन, सहसराम, रोहतास।*

टिप्पणी :-

उगऽ हो आदितमल

छठ पूजा के समय आ रहल बा। एह ब्रत के गीतन के आपन राग—रागिनी बा। कतना इंतजारी बा भक्तन के ओह अदितमल के ऊ लइए से पता चल जाला। ई अदितमल खाली सुरूजे भगवान ना हवन ऊ आदित्य हवन। भोजपुरी भासा वैदिक अर्थन के कतना असीमता आ विस्तार में धारन कइले बिआ एकर प्रमाण ई कुल्ही शब्द बाड़न स। हमनी के एगो अदितमल के विश्लेसन करेके। एहसे एह भासा के गरिमा परगट होई।

तिरिआ रात भर जगि के अदित भगवान् के उगे खातिर तपस्या कइले बाड़ी। अदिते के काहें ? एहसे कि ओकर अरथे ह—आत्+इत्= आदित।

www.bhojpurisahityangan.com

माने ह—तुरते। कहलीं ना कि ऊ समने बाड़न। कुंती माता प्रमान बाडी अब आदित्य शब्द पर विचार कइल जाव । पहिलका अरथ ह—जे रस दान करेला—आदत्ते रसान। दोसर का—ज्योतिषां या सम् आदत्ते— जे नछत्रन के प्रकास देला। आङ् + दा + यक्= आदित्य। ई अदितमल हमरा सूखल कंठ में रस दींहन। रतजगी में नछत्रने में रोशनी दीहन आ सुबहे आपन सुन्नर मुखड़ा देखा के अन्न जल गरहन करवइहन। ऊ कइसन बाड़न, कहां बाउन? त रातो में उ बाड़न। उनुके प्रकाश से सगरो दीपत बा। भासा आरपि, जे सगरो प्रकाश से दीप्त बा। ई देवता हवन, प्रतच्छ देवता एहसे अदिति के पुत्र हवन। आर्दते: पुत्र: आदित्य: (अदिति+ण्य= आदित्य) एहसे अपत्य के अरथ में आइल। काश्यप के पत्नी देवमाता अदिति हई। उनुकर सन्तान आदितेय आदित्य हवन। सूर्यम् आदितेयम् (ऋग्वेद में प्रयोग भइल बा। आदित्य के नाम से अउरी देवन के भी स्तुति कइल गइल बा (अन्यासामपि देवानाम् आदित्य प्रवादा: स्तुतयो भवन्ति) जइसे मित्र, वरून, अंश, स्वर सभे आदित्य ह। स्वर भी हमार ठीक ढंग से चले। स्वर ठीक ना चली त गीत कढ़ाई कहां से। सुख से चले वाला के स्वर कहल जाला— सुखेन अरण: (सु+ऋ+विच्=स्वर) चाहें, सुष्ठु तमांसि ईखति (सम्यक् प्रकार से जे अन्हार के दूर करे। सु+ईर= स्वर (ई के व्यत्यय से अ) चाहे सुऋत: = स्वृत: जे पृथिवी आ अंतरिच्छ के रसन के लेवे खातिर आवे—जाए। सुष्ठु भौमान् आन्तरिक्षान् च रसात् आदतुं ऋत: गत:। चाहें ग्रहन के जोती लावे खातिर गइल। चाहें दीप्ति से सगरो व्याप्त हो गइल। (ज्योतिषां ग्रहनक्षत्रादीनां भासम् आदातुं, सुष्ठु ऋत: गत:। प्रोज्ज्वल वर्ण आदित्य के व्याप्त करेला (प्र+अश्+नि) पृश्नि। पृश्नि बराबरे रस लावेलन एह से संस्पृष्टा हवन। ई आदित्य ग्रहन के प्रकाश के हरे वाला भी हवन। नाक भी आदित्य ह— रसानां नेता—रसन के नयन करे वाला। ई आदित्य जल के रस खींच के बरखा करावेलन। प्रकाश देलन। इन्हि के रश्मिजल से ई जगत् प्रकाशित होता। एही तरह से गौ विष्टप् नभ भी आदित्ये ह। अतने नाहीं आदित्य के बारह गो प्रकार बा। त्वष्टा (रात वाला आदित) सविता (सवेरे के पहिले के) भग (सूर्योदय से पहिले) (उदयकालीन आदित) केशी (रश्मियुक्त आदित) वृषाकपि (अस्त होखत) यम (साँझवाला डूबत सुरुज) आउर अजएक पात् (अस्तभावगत आदित्य) एहतरह से सयगेमन के हरे वाला, सभका के अपना भीतर समा लेवे वाला ई अदितमल के पूजा भोजपुरी समाज में कतना अरथ लेले परगट होता। अपना भाषा के सब्दन के भीतर पर कुल्ही रहस्य खुल जाता, हमनी के का हई आ अपना के का समुझत बानीं जा। आदित मल से जानकारी हो जाई। असहीं तिरिआ रात भर नइखी चिचिआत—'उगऽ हो' आदितमल। रिखिओ उहे कहत बाड़न—कल्याणतमं पश्यामि, अग्नेनय सुपथा राये।

—नकिति

www.bhojpurisahityangan.com

लोक गीत

– श्री भगवान पंडित

असरा में जरेला सनेहिया दिअरिया
सारी सारी रतिया, खेआल रउरी आवेला।

बानी अकसरूआ रउआ जी दूर गइनीं
सोची सोची बतिया सुखाइ के झूर भइनी
चुनरी के रंगवा बा, ओसहीं पिअरिया। सनेहिया.....।

हियवा में मीठे-मीठे उठेला लहरिया
कवनी करनवाँ हो गइलऽ तू शहरिया
पानवा के बोअल तू थानवा किअरिया। सनेहिया.....।

अंखिया में एकहीं बसल बा सपनवाँ
कब पुरा करे खाति अइवऽ अरमनवा
तनवा पताई जाई धई के पुअरिया। सनेहिया.....।

पतिया भगवान जी हो लिखले कलमवा
मोर बिरहिनिया के होइब कब अलमवा
भेजे बएरनिया तोहरी सुकवरिया। सनेहिया.....।

-मंगरवलिया

www.bhojpurisahityanagar.com

बखरा

- छत्रबाले 'अलबेला'

जवन बा तवन बांट लिहल
छाप के पोसटर साट दिहल
हक मांगे गइल मंझीला त
दुनों केहू डांट दिहल।

ऐने के ना भइल ओने के
चई भ ना मिलल कोने के
छोट बड़ सिरिफ हिस्सा लगवल
मंझिला के देलऽ का खोने के ?

मंझीलो के देबऽ जा कुछ
आ कि रखब लोग असहीं छुँछ
टूट गइल बा खइला बेगर
के करी अब ओकर पुछ

केकरो हक ना छिनल जाला
अपने नोट ना गिनल जाला
मतलब में रहऽ मत डूबल
सेतिहे बैर ना कीनल जाला।

एक ओरे जंगल बा राज
दोसर ओरे तू महाराज
मंझिला नेआय मांगतारे
उहो अब आई ना बाज।

चलऽ पंचइती करब गांवे
बरगद तले बइठ के छांवे
तीनों के तीन बखरा लागी
पँचनामा में तीनों नावें।

सिंगर शो रूम-धनबाद

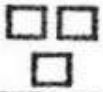

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

रोहतास जिला भोजपुरी साहित्य परिषद् से प्रकाशित गौरव-ग्रंथ

कविताएँ :-

कुंजन रामायन	:	कुंज बिहारी प्रसाद 'कुंजन'
सतवादी हरिश्चंद	:	विद्या शंकर 'विद्यार्थी'
चिरई	:	फंदोत्तीर्णानंद पुरी
सुमिरनी	:	रामप्रवेश पांडेय

नाटक :

शिवटहल काका	:	कुंज बिहारी प्रसाद 'कुंजन'

संस्कृत भासा के पहिलका नाटककार 'भास' के कुल्ही नाटकन के भोजपुरी अनुवाद आ अनुगायन :-

प्रतिमा	:	नन्द किशोर तिवारी
सपन सुनरी	:	नन्द किशोर तिवारी
दूतवाक्य	:	नन्द किशोर तिवारी
अभिषेक	:	नन्द किशोर तिवारी
उरुभंग	:	नन्द किशोर तिवारी
कर्णभार	:	नन्द किशोर तिवारी
बालचरित	:	नन्द किशोर तिवारी

निबन्ध (ललित) :

बतकही	:	नन्द किशोर तिवारी

प्रकास आ बतास खातिर बाकी नाटक आ महाकवि 'कुंजन' के कुल्ही रचना

प्रकाशक : रोहतास जिला भोजपुरी साहित्य परिषद, सहसराम।
मुद्रक : अंकित प्रेस एण्ड पब्लिकेशन्स, वाराणसी। ☎ : ३३३६२९